देश विदेश की लोक कथाऐं — एक कहानी कई रंग–5 ः

स्नो व्हाइट जैसी कहानियॉ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Snow White Jaisi Kahaniyan-5 (Like Snow White Stories-5)
Cover Page picture : Snow White Eating Apple
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
स्नो व्हाइट जैसी कहानियॉ 5
1 छोटी स्नोव्हाइट 7
2 नौजवान दासी 25
3 सौतेली मॉ, मारिया और सात डाकू 36
4 क्रिस्टल का ताबूत 46
5 सोने का पेड़ और चॉदी का पेड़ 64
6 सफेद राजकुमारी और सात बौने 74
7 सफेद फूल 94

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

स्नो व्हाइट जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम छह पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियॉ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह दूसरा उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये काम करने वाले को कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[1]

इसकी दूसरी पुस्तक में "टौम थम्ब जैसी कहानियॉ" दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।[2]

इस सीरीज़ की तीसरी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियॉ बहिन भाई के प्यार की कहानियॉ हैं।[3]

इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4]

इसी सीरीज़ की पॉचवीं पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। पर ऐसी कहानी केवल वहीं नहीं कही जाती बल्कि और देशों में भी कही सुनी जाती है।

हमें विश्वास है कि कहानियों का यह संग्रह भी तुम लोगों को पिछले चार संग्रहों की तरह से बहुत पसन्द आयेगा।

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[2] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"

[3] "One Story Many Colors-3" – like "Six Swans"

[4] "One Story Many Colors-4" – like "Three Oranges"

[5] "One Story Many Colors-5" – like "Snow White and the Seven Dwarves"

1 छोटी स्नोव्हाइट[6]

स्नो व्हाइट और सात बौने की लोक कथा यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। इस लोक कथा के बिना कोई लोक कथा का संग्रह पूरा हो ही नहीं सकता। यह लोक कथा यहॉ वहॉ के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

हो सकता है कि तुम लोगों ने यह लोक कथा पहले भी पढ़ी या सुनी हो तो अब इसे पढ़ कर देखो कि इसे तुम लोगों ने ऐसे ही सुना था या किसी और तरीके से सुना था। अगर इसे किसी और तरीके से पढ़ा या सुना हो तो हमको अपनी पढ़ी या सुनी हुई कहानी जरूर लिखना।

एक बार की बात है कि जाड़े के दिनों में जब बरफ पड़ रही थी तो एक सुन्दर रानी अपनी खिड़की में बैठी कुछ सिलाई कर रही थी और बरफ के गिरते हुए टुकड़ों को देख रही थी।

जब वह सिलाई कर रही थी और साथ में वह बरफ के टुकड़ों को भी देख रही थी तो उसकी सुई उसके हाथ में चुभ गयी और उसकी उँगली से तीन बूँद खून निकल कर नीचे बरफ में गिर पड़ा।

---

[6] The Little Snow-white – a folktale from Germany, Europe. Translated by DL Ashliman. Taken from "Kinder- und Hausmdrchen", by Jacob and Wilhelm Grimm. 1st edition, 1812. Vol 1, No 53. Its English version may be read at http://www.pitt.edu/~dash/type0709.html#youngslave

वह लाल रंग उस सफेद बरफ पर बहुत सुन्दर लग रहा था कि तभी उसके दिमाग में आया कि "काश मेरे एक बच्चा ऐसा होता जो बरफ की तरह सफेद होता, खून की तरह लाल होता और इस खिड़की के चौखटे की तरह काला होता।"

कुछ समय बाद उसके एक बेटी हुई जो बरफ की तरह सफेद थी, खून की तरह लाल थी और खिड़की के चौखटे की ऐबोनी की लकड़ी तरह काली[7] थी इसलिये उन्होंने उसका नाम स्नो व्हाइट रख दिया।

रानी दुनियॉ में सबसे सुन्दर स्त्री थी और अपनी सुन्दरता का उसको बड़ा घमंड था। उसके पास एक शीशा था। वह उसके सामने रोज सुबह खड़ी होती और उससे पूछती —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

और शीशा जवाब देता —
तुम मेरी रानी तुम सबसे ज़्यादा सुन्दर हो।

और इस तरह से वह जान जाती कि दुनियॉ में उससे ज़्यादा सुन्दर और कोई नहीं है। स्नो व्हाइट बड़ी होती जा रही थी। जब वह सात साल की हुई तो वह बहुत सुन्दर लगने लगी यहॉ तक कि

[7] Ebony wood is a very black wood.

वह रानी को भी सुन्दरता में पीछे छोड़ गयी। सो अबकी बार जब रानी ने अपने शीशे से पूछा —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

तो शीशा बोला —

तुम मेरी रानी सबसे सुन्दर हो यह सच है
पर छोटी स्नो व्हाइट तुमसे अभी भी हजारों गुना सुन्दर है।

जब रानी ने शीशे को यह कहते सुना तो वह राजकुमारी से जलन की वजह से पीली पड़ गयी। उसी समय से वह स्नो व्हाइट से जलने लगी।

अब जब भी वह स्नो व्हाइट को देखती तो उसको लगता कि केवल स्नो व्हाइट की वजह से ही वह अब दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं है और वही इस बात की जिम्मेदार भी है क्योंकि उसी ने ऐसी इच्छा प्रगट की थी कि उसके एक ऐसी बेटी हो।

इस बात ने उसका दिल स्नो व्हाइट की तरफ से फेर दिया। इस जलन ने उसके मन की शान्ति छीन ली।

एक दिन उसने अपने एक शिकारी को बुलाया और उससे कहा — "स्नो व्हाइट को जंगल में कहीं दूर ले जाओ और उसको मार दो। सबूत के तौर पर कि तुमने उसको मार दिया है उसके फेंफड़े

और जिगर ले आना। मैं उनको नमक लगा कर पकाऊँगी और खाऊँगी।"

वह शिकारी स्नो व्हाइट को जंगल में दूर ले गया। वहॉ जा कर जब उसने उसको मारने के लिये अपना शिकारी चाकू निकाला तो स्नो व्हाइट रोने लगी।

उसने उससे बार बार प्रार्थना की कि अगर वह उसकी ज़िन्दगी बख्श देगा तो वह जंगल में कहीं भाग जायेगी और फिर कभी वापस नहीं आयेगी।

शिकारी को उस बच्ची पर दया आ गयी क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी। साथ में उसने यह भी सोचा कि जंगल में तो जंगली जानवर ही इसको मार कर खा जायेंगे। मुझे खुशी है कि कम से कम मुझे इसको नहीं मारना पड़ेगा। सो उसने उसे छोड़ दिया और वहॉ से चला गया।

उसी समय वहॉ एक बच्चा सूअर आया तो उस शिकारी ने उस सूअर को मार कर उसके फेंफड़े और जिगर निकाल लिया और उनको रानी को स्नो व्हाइट के मारने के सबूत के तौर पर दे दिया।

रानी ने भी उनको यह समझ कर नमक लगा कर पकाया और खा लिया कि वह स्नो व्हाइट के फेंफड़े और जिगर खा रही है।

अब स्नो व्हाइट इतने बड़े जंगल में बिल्कुल अकेली थी। वह बहुत डरी हुई थी सो उसने भागना शुरू कर दिया। सारा दिन वह

नुकीले पत्थरों के ऊपर और कॉटों में से हो कर भागती रही। शाम को वह एक मकान के पास आ गयी।

यह मकान सात बौनों का था। ये बौने एक खान में काम करते थे और उस समय घर में नहीं थे। स्नो व्हाइट उस घर के अन्दर घुस गयी तो वहॉ उसको सब चीज़ें बहुत छोटी छोटी लगीं।

वहॉ की खाने की मेज पर सात छोटी छोटी प्लेटें लगी थीं, सात छोटी छोटी चम्मचें थीं, सात छोटे छोटे चाकू थे, सात छोटे छोटे कॉटे थे और सात छोटे छोटे प्याले थे।

दीवार के सहारे सात छोटे छोटे पलंग बिछे हुए थे जिन पर बिस्तर बिछे हुए थे। वे बिस्तर ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने उन्हें अभी अभी लगाया हो।

स्नो व्हाइट बहुत भूखी और प्यासी थी। उसने सब प्लेटों में से थोड़ी थोड़ी सब्जी और थोड़ी थोड़ी डबल रोटी खायी। फिर हर प्याले में से थोड़ी थोड़ी शराब पी।

थकी तो वह थी ही तो उसने हर बिस्तर पर लेट कर देखा पर कोई बिस्तर उसको ठीक नहीं लगा सिवाय सातवें बिस्तर के। वह उसी बिस्तर में लेट गयी और सो गयी।

रात हुई तो सातों बौने काम से घर लौटे। उन्होंने अपनी सात छोटी छोटी मोमबत्तियॉ जलायीं तो देखा कि घर में तो कोई था।

पहला बौना बोला — "मेरी कुरसी पर कौन बैठा था?"

दूसरा बौना बोला — "मेरी प्लेट में से खाना किसने खाया?"

तीसरा बौना बोला — "मेरी डबल रोटी किसने खायी?"

चौथा बौना बोला — "मेरी सब्जियॉ किसने खायीं?"

पॉचवॉ बौना बोला — "मेरा कॉटा किसने इसतेमाल किया?"

छठा बौना बोला — "मेरी छुरी कौन इस्तेमाल कर रहा था?"

सातवॉ बौना बोला — "मेरे प्याले में से शराब किसने पी?"

पहला बौना फिर बोला — "मेरे बिस्तर में कौन चढ़ा?"

इस तरह जब सातवॉ बौना अपने बिस्तर तक पहुँचा तो उसने देखा कि वहॉ तो स्नो व्हाइट सोयी हुई थी गहरी नींद में। बाकी छह बौने भी वहीं दौड़े आ गये और आश्चर्य से उनके मुँह से एक चीख निकल गयी।

वे अपनी अपनी मोमबत्ती ले कर आये और उसकी रोशनी में उसको देख कर बोले — "हे भगवान, हे भगवान। यह कितनी सुन्दर है।"

वह लड़की उनको इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने उसको उठाया नहीं बल्कि उसी बिस्तर पर सोने दिया। सातवॉ बौना एक एक घंटा अपने हर साथी के पास सोया जब तक रात खत्म हुई।

सुबह को जब स्नो व्हाइट सो कर उठी तो उन बौनों ने उससे पूछा कि वह कौन थी और उसको उनके घर का रास्ता कैसे मिला।

तब उसने उनको अपनी कहानी सुनायी कि किस तरह से उसकी मॉ उसको मारना चाहती थी और फिर कैसे शिकारी ने उसको

दया करके छोड़ दिया था। कैसे वह सारा दिन जंगल में भागती रही और आखीर में कैसे वह उनके घर आ गयी।

बौनों को उसके ऊपर बहुत दया आयी। वे बोले — "अगर तुम हमारा घर ठीक रखो, खाना बनाओ, हमारी सिलाई करो, हमारे बिस्तर ठीक करो, हमारे कपड़े धोओ, हमारी बुनाई करो और घर की सब चीज़ें ठीक से रखो तो तुम यहॉ रह सकती हो। तुम जो चाहोगी वह तुमको मिल जायेगा।

हम अपना दिन खानों से सोना निकालने में बिताते हैं। रात को हम लोग घर आते हैं तब तक हमारा खाना तैयार रहना चाहिये। उस बीच तुम यहॉ पर अकेली रहोगी सो रानी का ध्यान रखना और किसी अजनबी को अन्दर नहीं आने देना।"

उधर स्नो व्हाइट के फेंफड़े और जिगर खाने के बाद रानी ने सोचा कि अब तो दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री वही है सो अगले दिन उसने अपने शीशे से फिर पूछा —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

तो शीशा बोला —

तुम मेरी रानी सबसे सुन्दर हो यह सच है
पर छोटी स्नो व्हाइट जो सात पहाड़ों के उस पार है तुमसे हजार गुना सुन्दर है।

यह सुन कर रानी चौंक गयी। वह जान गयी कि उसको धोखा दिया गया है। शिकारी ने स्नो व्हाइट को मारा नहीं होगा और क्योंकि सात पहाड़ों में केवल सात बौने ही रहते थे इसलिये वह यह भी समझ गयी कि उन सात बौनों ने ही उसे बचा लिया होगा।

उसने तुरन्त सोचना शुरू कर दिया कि वह अब स्नो व्हाइट को कैसे मार सकती है क्योंकि उसके मन को तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब तक कि उसका वह शीशा उससे यह नहीं कहेगा कि तुम ही दुनियॉ की सबसे ज़्यादा सुन्दर स्त्री हो।

आखिर उसके दिमाग में एक प्लान आ गया। उसने एक सामान बेचने वाली बुढ़िया का वेश रखा और अपना चेहरा रंग लिया ताकि उसे कोई पहचान न सके और उन सातों बौनों के घर पहुँच गयी।

वहॉ जा कर उसने उनके घर का दरवाजा खटखटाया — "दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। मैं कुछ अच्छा सामान बेचने वाली एक बुढ़िया हूँ।"

स्नो व्हाइट ने खिड़की से बाहर झॉक कर उससे पूछा — "क्या क्या है तुम्हारे पास?"

"बच्चे, मेरे पास फ्राक के ऊपर वाले हिस्से में लगाने वाली जालियॉ हैं।" कह कर रानी ने उसको एक जाली हाथ में ले कर आगे करके उसको दिखायी

जिसमें पीले लाल और नीले सिल्क की डोरियॉ लगी हुई थीं।

"क्या तुमको यह पसन्द है?"

"हॉ।" स्नो व्हाइट ने सोचा कि वह बुढ़िया तो ठीक ही लगती है सो वह उसको अन्दर आने दे सकती है। उसने दरवाजा खोल दिया और उस जाली के लिये भाव ताव कर लिया।

बुढ़िया बोली — "तुम्हारी फ्राक में लगी यह जाली ठीक नहीं है लाओ मैं इसको ठीक कर दूँ।"

स्नो व्हाइट उसके सामने जा कर खड़ी हो गयी तो उसने उसकी जाली को इतने ज़ोर से खींच कर कसा कि स्नो व्हाइट सॉस भी न ले सकी और नीचे गिर गयी जैसे मर गयी हो।

बुढ़िया सन्तुष्ट हो गयी और अपने घर चली गयी।

जल्दी ही रात हो गयी और सातों बौने घर लौटे। वे सब यह देख कर बहुत डर गये कि उनके घर में अॅधेरा है और उनकी प्यारी स्नो व्हाइट जमीन पर गिरी पड़ी है जैसे कि वह मर गयी हो।

उन्होंने उसको उठाया तो देखा कि उसकी फ्राक की जाली बहुत कसी हुई थी। उन्होंने उसकी जाली को दो हिस्सों में काट दिया तब कहीं जा कर वह सॉस ले सकी और ज़िन्दा हो सकी।

उन्होंने उससे कहा — "यह जरूर ही रानी होगी जिसने तुमको मारने की कोशिश की है। तुम अपना ख्याल रखो और किसी को भी घर में मत आने दो।"

अगले दिन रानी ने फिर से शीशे से पूछा —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

तो शीशा बोला —
तुम मेरी रानी सबसे सुन्दर हो यह सच है
पर छोटी स्नो व्हाइट जो सात बौनों के साथ है तुमसे हजार गुना सुन्दर है।

यह सुन कर वह फिर से डर गयी और उसका दिल धड़कने लगा क्योंकि वह समझ गयी कि स्नो व्हाइट अभी भी मरी नहीं है और उसके वहॉ से आने के बाद ज़िन्दा हो गयी है।

सो वह सारे दिन और सारी रात यही सोचती रही कि स्नो व्हाइट को कैसे पकड़ा जाये और मारा जाये।

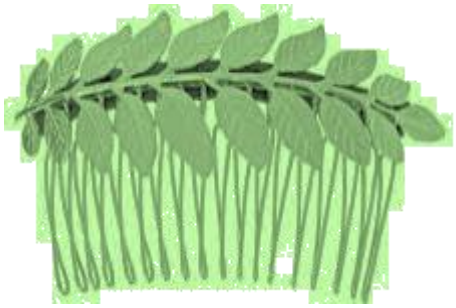

फिर उसके दिमाग में एक प्लान आया। अबकी बार उसने एक ज़हर भरी कंघी बनायी और एक दूसरा वेश रख कर वह फिर से उन बौनों के घर चल दी।

बौनों के घर पहुॅच कर उसने फिर उनके घर का दरवाजा खटखटाया पर स्नो व्हाइट ने अन्दर से जवाब दिया — "मुझे किसी को घर में बुलाने की इजाज़त नहीं है। मैं दरवाजा नहीं खोलूॅगी"

यह सुन कर रानी ने वह कंघी निकाली तो स्नो व्हाइट ने देखा कि वह कंघी तो बहुत चमक रही थी और साथ में वह स्त्री भी

उसके लिये बिल्कुल अजनबी थी, रानी नहीं थी, सो उसने उसके लिये दरवाजा खोल दिया और उससे वह कंघी खरीद ली।

कंघी बेच कर उस स्त्री ने कहा — "लाओ मैं तुम्हारे बालों में इससे कंघी कर दूँ।" उसने उस कंघी को स्नो व्हाइट के सिर में मुश्किल से छुआया ही था कि वह लड़की नीचे गिर गयी और मर गयी।

"अब यह कंघी तुमको यहीं लिटा कर रखेगी। लेटी रहो यहॉ हमेशा के लिये।" कह कर रानी सन्तुष्ट हो कर अपने घर चली गयी।

बौने समय से ही घर आ गये। उन्होंने देखा कि उनकी स्नो व्हाइट को क्या हो गया। उन्होंने देखा कि उसके सिर में एक कंघी लगी है। उन्होंने जैसे ही उसको उसके सिर से बाहर निकाला तो स्नो व्हाइट ने अपनी ऑखें खोल दीं और वह ज़िन्दा हो गयी।

उसने उन बौनों से फिर से वायदा किया कि वह अब से किसी को अन्दर नहीं आने देगी।

अगले दिन रानी ने फिर शीशे से पूछा —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

तो शीशा बोला —

तुम मेरी रानी सबसे सुन्दर हो यह सच है
पर छोटी स्नो व्हाइट जो सात बौनों के साथ है तुमसे हजार गुना सुन्दर है।

अबकी बार जब रानी ने यह सुना तो वह गुस्से से आग बबूला हो गयी और कॉपने लगी। वह बोली — "स्नो व्हाइट को मरना ही होगा चाहे उसको मारने में मेरी अपनी जान ही क्यों न चली जाये।"

तब वह अपने एक बहुत ही प्राइवेट कमरे में गयी। उस कमरे के अन्दर किसी और को जाने की इजाज़त नहीं थी।

वहॉ जा कर उसने एक जहर भरा सेब बनाया। बाहर से वह लाल और बहुत सुन्दर दिखता था और जो भी उसको देखता उसको खाना चाहता।

फिर उसने एक किसान स्त्री का वेश बनाया और फिर से उन्हीं बौनों के घर चल दी। वहॉ जा कर उसने फिर से उनके घर का दरवाजा खटखटाया।

स्नो व्हाइट ने बाहर झॉका और बोली — "मुझे किसी को अन्दर बुलाने की इजाज़त नहीं है। बौनों ने मुझे बहुत सख़्ती से मना किया हुआ है। इसलिये मैं दरवाजा नहीं खोलूँगी।"

किसान स्त्री बोली — "अगर तुम दरवाजा नहीं खोलना चाहती तो मत खोलो मैं तुमसे दरवाजा खोलने की जिद नहीं करती। देखो मैं यह सुन्दर मीठे सेब बेच रही हूँ पर तुमको मैं एक सेब चखने के लिये दे सकती हूँ।"

"नहीं मैं कोई चीज़ नहीं लेना चाहती। बौनों ने मुझे मना किया है।"

"अगर तुम्हें डर लगता है तो देखो मैं यह सेब दो हिस्सों में काटती हूँ और इसका आधा हिस्सा मैं खाती हूँ और इसका दूसरा आधा हिस्सा जो बिल्कुल तुम्हारे लाल लाल गाल जैसा है तुम खा लो।"

यह सेब इतनी होशियारी से बनाया गया था कि उसका केवल आधा हिस्सा ही जहरीला था दूसरा आधा हिस्सा ठीक था। उस किसान स्त्री ने अच्छा वाला हिस्सा खुद खा लिया।

जब स्नो व्हाइट ने देखा कि वह किसान स्त्री उस सेब का आधा हिस्सा खुद खा रही है तो उसकी उस सेब को खाने की इच्छा और बढ़ गयी।

रानी ने बचा हुआ आधा सेब जो जहरीला था खिड़की में से हाथ घुसा कर उसको दे दिया। स्नो व्हाइट ने अपने मुँह से उसको ज़रा सा काटा और मुश्किल से अपने मुँह के अन्दर किया कि वह तो मर कर नीचे गिर पड़ी।

रानी यह देख कर बहुत खुश हुई। वह घर गयी और जा कर अपने शीशे से पूछा —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

और शीशे ने जवाब दिया —

तुम मेरी रानी तुम सबसे ज़्यादा सुन्दर हो।

रानी शान्ति की सॉस ले कर बोली — "अब मुझे थोड़ी शान्ति है क्योंकि एक बार फिर मैं ही दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री हूॅ। अब तक तो स्नो व्हाइट मर भी गयी होगी।"

शाम को जब बौने अपनी खानों से काम करके वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि स्नो व्हाइट तो ज़मीन पर बेजान पड़ी है। उन्होंने उसकी फ्राक की जाली ढीली की, उसके बालों में कुछ ढूॅढने की कोशिश की कि शायद कहीं कोई जहरीली चीज़ लगी हो पर उन्हें कहीं कुछ नहीं मिला और वे उसको ज़िन्दा नहीं कर पाये।

उन्होंने उस बच्ची को लकड़ी की एक काठी पर लिटा दिया और सब उसके पास बैठ कर खूब रोने लगे। वे उसको दफन करने वाले ही थे कि उन्होंने देखा कि उसका शरीर तो वैसा का वैसा ही था। वह तो मरी हुई जैसी लग ही नहीं रही थी। उसके गाल अभी भी लाल थे।

तो उन्होंने उसके लिये शीशे का एक ताबूत[8] बनवाया और उसको उसमें लिटा दिया ताकि वह उसमें आसानी से दिखायी देती रहे।

[8] Translated for the words "Glass Coffin" – means see through coffin from which the body can be seen from outside – see its picture above.

उस ताबूत के ऊपर उन्होंने उसका नाम और उसके पुरखों के नाम सोने के अक्षरों में लिखे। रोज उन सातों बौनों में से कोई एक बौना हमेशा ही उस ताबूत के पास उसकी रखवाली के लिये घर में रहता था।

स्नोव्हाइट वहॉ उस ताबूत में बहुत दिनों तक लेटी रही पर उसका शरीर खराब नहीं हुआ। वह अभी भी बरफ की तरह सफेद थी और खून की तरह लाल थी। और अगर वह अपनी ऑखें खोलती तो वे ऐबोनी की लकड़ी की तरह काली थीं। वह तो बस उसमें ऐसे लेटी हुई थी जैसे सो रही हो।

एक दिन एक नौजवान राजकुमार उन बौनों के घर आया और उसने उनसे रात को रहने की जगह मॉगी। उन्होंने उसको जगह दे दी। वह जब अन्दर गया तो उसने शीशे के ताबूत में रखी एक लड़की देखी जिसके चारों तरफ सात मोमबत्तियॉ जल रही थीं। वह उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया।

उसने ताबूत पर लिखा हुआ पढ़ा तो उसको पता चला कि वह तो एक राजा की बेटी थी।

उसने उन बौनों से स्नो व्हाइट के साथ उस शीशे के ताबूत को उसको बेचने की प्रार्थना की। पर वे उस ताबूत और लड़की को किसी भी कीमत पर राजकुमार को बेचने के लिये तैयार नहीं थे।

तब उसने बौनों को उस ताबूत को उसे ऐसे ही देने के लिये कहा क्योंकि उसको देखने के बाद अब वह उसको देखे बिना नहीं रह सकता था।

उसने सोचा कि वह उसको अपने पास रख लेगा और उसको अपनी ज़िन्दगी की सबसे कीमती चीज़ समझ कर उसकी इज़्ज़त करेगा।

बौनों को उस पर दया आ गयी तो उन्होंने उस ताबूत को स्नो व्हाइट के साथ ही उस राजकुमार को दे दिया। राजकुमार उस ताबूत को अपने किले में ले गया और वहॉ जा कर उसको एक कमरे में रखवा दिया।

अब वह वहॉ उस कमरे में सारा दिन बैठा रहता। उसकी ऑखें उसके ऊपर से हट ही नहीं पाती थीं।

जब कभी वह बाहर जाता तो वह स्नो व्हाइट को देख नहीं पाता तो वह उदास हो जाता। अगर वह ताबूत उसके सामने नहीं होता तो वह एक कौर भी खाना नहीं खा पाता।

वे नौकर जिनको बार बार उस ताबूत को इधर से उधर ले जाना पड़ता था वे रोज रोज यह सब करते हुए कुछ गुस्सा से हो गये।

एक दिन उन्होंने उस ताबूत को खोला और उनमें से एक नौकर ने स्नो व्हाइट को सीधा करते हुए कहा — "हम लोगों को इस मरी हुई लड़की की वजह से रोज ही परेशानी उठानी पड़ती है।"

यह कहते हुए उसने उसकी पीठ में एक घूँसा मारा। घूँसा मारते ही उसके गले में जहरीले सेब का जो बिना निगला हुआ टुकड़ा पड़ा था वह बाहर निकल आया और सेब का टुकड़ा बाहर निकलते ही स्नो व्हाइट ज़िन्दा हो गयी।

यह देखते ही नौकर लोग तो डर गये और जा कर यह खबर राजकुमार को दी।

स्नोव्हाइट ताबूत में से उठ कर राजकुमार के पास गयी तो राजकुमार तो स्नो व्हाइट को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ।

दोनों वहॉ से खाने की मेज पर गये और दोनों ने साथ साथ खाना खाया। उनकी शादी अगले दिन की तय हो गयी। स्नो व्हाइट की मॉ को भी शादी में बुलाया गया।

उस सुबह रानी अपने शीशे के सामने गयी और उससे पूछा —

शीशे ओ शीशे ओ दीवार पर लगे शीशे
बता इस दुनियॉ में कौन सबसे ज़्यादा सुन्दर है

और शीशे ने जवाब दिया —

तुम मेरी रानी तुम सबसे ज्यादा सुन्दर हो।
पर जवान रानी तुमसे हजार गुना ज़्यादा सुन्दर है।

यह सुन कर रानी बहुत डर गयी और डर के मारे कुछ भी न बोल सकी। फिर भी वह अपनी जलन की वजह से उस लड़की की

शादी में गयी जिसके घर से उसको बुलावा आया था। जब वह वहॉ पहुॅची तो उसने देखा कि वह लड़की तो स्नो व्हाइट थी।

वहॉ उन्होंने एक जोड़ी लोहे के जूते आग में रख कर तब तक गरम किये जब तक वे खूब लाल नहीं हो गये। फिर वे जूते उस रानी को पहनाये गये और उन्हीं जूतों को पहन कर उसको नाचना पड़ा।

उसके पॉव बहुत जल गये थे और वह रुक भी नहीं सकती थी जब तक वह मर नहीं गयी।

2 नौजवान दासी[9]

स्नो व्हाइट कहानी जैसी एक और कहानी। यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश की कहानियों से ली है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक जगह सर्वा स्कूरा का बैरन[10] रहा करता था। उसकी एक छोटी बहिन थी सिलिया[11] जो बहुत सुन्दर थी। वह दूसरी सुन्दर लड़कियों के साथ बागीचे में घूमा करती थी।

एक दिन जब वह रोज की तरह बागीचे में घूम रही थी तो उसको एक गुलाब का पेड़ दिखायी दिया। उसके ऊपर एक लाल रंग का गुलाब का फूल पूरा खिला हुआ था।

उन लड़कियों ने आपस में कहा कि जो कोई भी उस गुलाब के ऊपर से बिना उसको छुए कूद जायेगा वह फलॉ फलॉ चीज़ जीतेगा। सो उन लड़कियों ने एक के बाद एक उसके ऊपर से कूदना शुरू किया पर कोई भी लड़की उसके ऊपर से उसको बिना छुए नहीं कूद सकी।

---

[9] The Young Slave – a folktale from Italy, Europe. Adapted from the Book "Il Pentamerone: or, The Tale of Tales", translated by Richard Burton, Vol 1, Story No 8. Its English version may be read at http://www.pitt.edu/~dash/type0709.html#youngslave

[10] Baron – is a title of honor, often hereditary, and ranks as one of the lower titles in the various nobility systems of Europe. The female equivalent is Baroness.

[11] Cilia – name of the sister of the Baron.

फिर सिलिया की बारी आयी तो वह थोड़ी दूर से तेज़ दौड़ कर आयी और उस फूल के ऊपर से कूदी और फूल को बिना छुए ही उसको पार कर गयी पर फिर भी उससे उस फूल की एक पत्ती नीचे गिर गयी।

कोई और न देख ले इसलिये उसने उस पत्ती को तुरन्त उठा लिया और खा लिया और इस तरह वह शर्त जीत गयी।

मुश्किल से तीन दिन ही बीते होंगे कि उसको लगा कि उसको बच्चे की आशा हो गयी है। यह जान कर तो वह दुख से मर ही गयी। वह यह जान ही न सकी कि ऐसा कैसे हुआ।

वह यह सब बदनामी अपने सिर नहीं लेना चाहती थी सो वह कुछ परियों के घर गयी और उनसे अपना मामला कहा। उन्होंने कहा कि इसमें कोई शक नहीं था कि उस गुलाब की पत्ती की वजह से ही वह मॉ बनने वाली थी जो उसने शर्त जीतने के लिये निगल ली थी।

यह सुन कर सिलिया ने अपनी हालत जब तक उससे छिपायी जा सकी छिपायी पर एक समय आया जब उसने एक बच्ची को जन्म दिया।

उसकी बच्ची का चेहरा चौदहवीं के चॉद जैसा सुन्दर था। उसने उस बच्ची का नाम लिसा[12] रख दिया और उसको बड़ा होने के लिये परियों के घर भेज दिया।

[12] Lisa – the name of the daughter of Cilia

वहॉ जा कर हर परी ने उसको एक जादू दिया पर आखिरी परी भाग कर उसको देखना चाहती थी कि उस भागने में उसका पैर मुड़ गया और गुस्से और दर्द में उसने उस बच्ची को शाप दिया कि जब वह सात साल की होगी तो उसकी मॉ उसके बालों में कंघी करते समय कंघी भूल जायेगी और इससे वह मर जायेगी।

सो यह समय भी निकला और फिर वह समय भी आया जब लिसा की मॉ कंघी करते हुए उसके सिर में कंघी भूल गयी और उसकी बेटी लिसा मर गयी।

सिलिया अपनी इस बदकिस्मती पर बहुत दुखी हुई। रोते धोते उसने सात किस्टल के बक्से बनाने का हुकुम दिया जो एक के अन्दर एक आ जाते।

उनमें से सबसे छोटे वाले बक्से में उसने लिसा को लिटाया और फिर उन बक्सों को उसने महल के एक बहुत ही दूर के कमरे में रखवा दिया और उस कमरे की चाभी अपने जेब में रख ली।

दिन पर दिन उसकी हालत बहुत खराब होती गयी। और जब उसको लगा कि अब वह मरने वाली है तो उसने अपने भाई को बुला भेजा।

उसने उससे कहा — "भैया। मुझे लग रहा है कि मैं धीरे धीरे मर रही हूॅ इसलिये मैं अपनी सारी चीज़ें तुमको सौंप कर जा रही हूॅ।

क्योंकि तुम ही अकेले इन सब चीज़ों के मालिक हो इसलिये तुम यह कसम खाओ कि तुम महल के उस दूर वाले कमरे को कभी नहीं खोलोगे। यह उस कमरे की चाभी है और इसको तुम सॅभाल कर अपनी मेज के अन्दर रखना।"

सिलिया का भाई सिलिया को बहुत प्यार करता था। उसने सिलिया से वायदा किया कि वह महल के उस दूर वाले कमरे को कभी नहीं खोलेगा।

इस विश्वास के साथ सिलिया ने उसको विदा कहा और मर गयी।

एक साल के बाद बैरन ने शादी कर ली। एक दिन उसके दोस्तों ने उसको शिकार के लिये न्यौता दिया तो उसने अपने महल की जिम्मेदारी अपनी पत्नी के ऊपर छोड़ी और शिकार पर चल दिया। जाते समय उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह महल का वह दूर वाला कमरा न खोले।

पर स्त्री का स्वभाव तो ऐसा ही होता है कि जिस काम को उसको मना किया जाता है वह उस काम को जरूर करती है।

जैसे ही बैरन शिकार पर गया उसकी पत्नी के मन में कुछ शक पैदा हुआ कि उसके पति ने उसको वह कमरा खोलने से क्यों मना

किया सो उसने बैरन की मेज से चाभी निकाली और वह कमरा खोलने चल दी।

वहॉ जा कर उसने दरवाजा खोला तो देखा कि उसमें सात क्रिस्टल के बक्से रखे हुए हैं। और उनमें से सबसे छोटे बक्से के अन्दर एक बहुत सुन्दर बच्ची सो रही है।

वह बच्ची अपनी उम्र के साथ साथ बड़ी हो रही थी और सो उसके साथ साथ बड़े हो रहे थे उसके वे बक्से भी।

उस बच्ची को देख कर वह जल गयी और उसने चिल्लाना शुरू किया — "ओह मेरे भगवान, चाभी कमर के नारे में और भैंसा उसके अन्दर। तो यह वजह थी मेरे इस कमरे का दरवाजा न खोलने की ताकि मैं मुहम्मद को न देख सकूॅ जिसको वह इतने दिनों से पूजता रहा है।"

यह कहते हुए उसने उस बच्ची को उसके बालों से पकड़ कर उस क्रिस्टल के बक्से से बाहर खींच लिया। उसके बालों के इस तरह खींचने में उस बच्ची की मॉ ने जो कंघी उसके बालों में लगी छोड़ दी थी वह निकल कर बाहर आ गयी और वह बच्ची ज़िन्दा हो गयी।

ज़िन्दा होते ही वह बच्ची चिल्लायी — "ओ मेरी मॉ। ओ मेरी मॉ।"

बैरन की पत्नी बोलीी — "आ मैं तुझे देती हूॅ तेरी मॉ और तेरे पिता जी।" कह कर उसने गुस्से में आ कर उसने उसकी खूब पिटायी की।

उसने उसको एक दासी की तरह के कपड़े पहना दिये और उस बच्ची के सुन्दर बाल कटवा दिये। अब वह उस पर कड़ी नजर रखने लगी।

बैरन जब शिकार पर से वापस लौट कर आया तो इतनी छोटी सी बच्ची के साथ इतना बुरा बरताव करते देख कर उसने अपनी पत्नी से पूछा कि वह उसके साथ इतना बेरहम और बुरा बरताव क्यों कर रही थी।

उसकी पत्नी ने बताया कि वह एक दासी थी जिसको उसकी एक चाची ने उसके पास भेजा था। और यह दासी इतनी खराब थी कि उसको डॉट कर रखना बहुत जरूरी था ताकि वह ठीक से काम कर सके।

कुछ समय बाद वह बैरन गॉब के एक मेले में गया और क्योंकि वह एक बहुत ही दयावान और बहुत ही अच्छा भला कुलीन आदमी था उसने अपने घर में सबसे बड़े से ले कर सबसे छोटे तक, यहॉ तक कि अपनी बिल्लियों से भी, सभी से यह पूछा कि वह उस मेले से उनके लिये क्या ले कर आये।

किसी ने कुछ कहा तो किसी ने कुछ। आखीर में नम्बर आया उस दासी लड़की का।

पर उसकी पत्नी बोली — "इस दासी को छोड़ो। हमको अपने सारे काम अपने नियमों में रह कर ही करने चाहिये जैसे हम सब अपना खाना एक ही बरतन में बनाते हैं। तुम इसको छोड़ दो। इसको बहुत ज़्यादा बिगाड़ने की जरूरत नहीं है।"

पर बैरन क्योंकि बहुत ही दयावान था वह उससे पूछता ही रहा कि वह उसके लिये मेले से क्या ले कर आये।

आखिर उस बच्ची ने जवाब दिया — "मुझे एक गुड़िया चाहिये, एक चाकू चाहिये और थोड़ा सा प्यूमिस पत्थर[13] चाहिये। और अगर आप यह लाना भूल जायें तो आपके रास्ते में जो नदी पड़ती है आप उसे पार न कर सकें।"

यह सुन कर बैरन चला गया। वहॉ जा कर उसने जिस जिसके लिये जो भी सामान खरीदना था खरीद लिया पर वह वह सामान खरीदना भूल गया जो उसकी बहिन की लड़की ने उसको लाने के लिये कहा था।

जब घर आते समय वह नदी के किनारे आया तो नदी ने पत्थर फेंकने शुरू कर दिये और वह पहाडों से पेड़ बहा कर ले जाने लगी। यह देख कर बैरन डर गया और आश्चर्य में पड़ गया।

तब उसको उस नौजवान दासी का शाप याद आया। वह तुरन्त ही मेले वापस लौट गया और उस बच्ची की तीनों चीज़ें ले कर

[13] Pumice stone is lighter than the water and thus can float on it. It is believed that Shree Raam built His bridge to Lankaa by those stones only.

आया। तब कहीं जा कर वह नदी पार कर सका और अपने घर लौट सका।

घर आ कर उसने सबकी चीज़ें सबको दे दीं। जैसे ही उस बच्ची को उसकी चीज़ें मिलीं वह रसोईघर में चली गयी। उसने वह गुड़िया अपने सामने रख ली और रोने लगी।

वह उस बेजान लकड़ी की गुड़िया से अपनी कहानी ऐसे कह रही थी जैसे किसी जानदार आदमी से कह रही हो।

उसने देखा कि वह गुड़िया तो कोई जवाब नहीं दे रही थी तो उसने अपना चाकू उठाया, उसको प्यूमिस पत्थर पर तेज़ किया और उस गुड़िया से बोली — "अगर तू मुझसे नहीं बोली तो मैं अपने आपको मार लूँगी और इस तरह अपना अन्त कर लूँगी।"

यह सुन कर वह लकड़ी की गुड़िया बैग पाइप[14] बाजे की तरह फूल गयी और बोली — "मैं तुझे सुन रही हूँ मैं कोई बहरी नहीं हूँ।" ऐसा कई दिनों तक चलता रहा।

बैरन की एक तस्वीर रसोईघर के पास ही लटक रही थी। तो एक दिन बैरन जब उधर से गुजर रहा था तो उसने रसोईघर से आती उस नौजवान दासी की ये रोने और बातें करने की आवाजें सुनी तो उसको यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह किससे बात कर रही थी।

[14] Bag Pipe is kind of wind music instrument – see its picture above.

उसने चाभी के छेद में से देखा कि लिसा के सामने वह गुड़िया रखी है जो वह उसके लिये मेले से लाया था और वह उसको बता रही थी कि कैसे उसकी मॉ उस गुलाब के पेड़ के ऊपर से कूद गयी थी, फिर कैसे उसने उस गुलाब के फूल की पत्ती खा ली थी और फिर कैसे वह पैदा हुई थी।

फिर कैसे सारी परियों ने उसको जादू दिये और फिर कैसे आखिरी परी ने उसको शाप दिया कि उसकी मॉ उसके बालों में कंघी लगी छोड़ कर भूल जायेगी और वह मर जायेगी।

फिर कैसे उसको सात क्रिस्टल के बक्सों के अन्दर रखा गया और उन बक्सों को महल के दूर के कमरे में रखवा दिया गया। फिर कैसे उसकी मॉ मर गयी और वह उस कमरे की चाभी अपने भाई के पास छोड़ गयी।

फिर उसने उस गुड़िया को यह भी बताया कि किस तरह बैरन शिकार पर गया और कैसे उसकी पत्नी ने जल कर अपने पति का हुकुम नहीं माना।

फिर कैसे वह उस दूर वाले कमरे में घुसी और फिर कैसे उसके बाल काटे। फिर कैसे उसको दासी की तरह रखा और फिर किस तरह उसको बेरहमी से पीटा।

आखीर में वह रोते हुए बोली — "अब बता मेरी गुड़िया, तू क्या कहती है? क्या मैं इस चाकू से अपनी जान न ले लूँ?"

यह कहते हुए वह पास में रखे प्यूमिस पत्थर पर चाकू तेज़ करने लगी।

चाकू तेज़ करके वह अपने आप को मारने ही वाली थी कि बैरन ने पैर से एक ठोकर मार रसोईघर का दरवाजा तोड़ दिया और उस बच्ची के हाथ से चाकू छीन लिया।

उसने उसको अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा। जब उसने अपनी कहानी उसको सुना दी तो बैरन ने उसको अपने गले से लगा लिया और उसको महल से बाहर अपने एक रिश्तेदार के घर भेज दिया।

वहॉ जा कर उसने अपने उस रिश्तेदार से कहा कि बुरे बरताव की वजह से वह लड़की शरीर और मन दोनों से बहुत ही बीमार है और अपनी सुन्दरता खो चुकी है।

सो वे उसका इतने अच्छे तरीके से ख्याल रखें कि वह शरीर और मन दोनों तरीके से तन्दुरुस्त हो जाये और उसके चेहरे की ताजगी वापस आ जाये।

लिसा को वहॉ बहुत अच्छे से रखा गया और कुछ ही महीनों में वह एक बहुत सुन्दर देवी की तरह दिखायी देने लगी। उसके बाद उसके मामा ने उसको अपने महल में बुला लिया और उसके आने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी।

बैरन ने उस दावत में आये हुए लोगों से अपनी भान्जी[15] के रूप में लिसा का परिचय कराया और बाद में उसको सबके सामने अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा। सब लोग लिसा के साथ बैरन की पत्नी बेरहम बरताव सुन कर रो पड़े।

बैरन को उसकी पत्नी का वह जलन भरा बरताव बिल्कुल अच्छा नहीं लगा था सो उसने अपनी पत्नी को उसके घर भेज दिया। कुछ दिनों बाद उसने अपनी भानजी की शादी एक बहुत ही अच्छे लायक नौजवान से कर दी जिसको वह पसन्द करती थी।

[15] Translated for the word “Niece” – here it means “sister’s daughter”.

3 सौतेली माँ, मारिया और सात डाकू[16]

स्नो व्हाइट कहानी जैसी एक और कहानी। यह कहानी भी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक छोटी सी प्यारी सी बेटी थी जिसका नाम था मारिया[17]। वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

उसने उसको स्कूल भेजा जहाँ वह एक स्त्री से सिलाई और बुनाई सीखती थी। जब वह वहाँ से घर लौटती तो उसकी वह टीचर हमेशा कहती — "तुम अपने पिता को मेरी नमस्ते कहना।"

रोज रोज की इस नमस्ते की वजह से मारिया के पिता ने सोचा कि यह स्त्री शायद मुझसे शादी करना चाहती है सो उसने उस स्त्री से शादी कर ली।

मारिया के पिता से शादी करने के बाद से वह स्त्री मारिया के लिये बहुत बुरी हो गयी। वह उससे बहुत बुरा बरताव करने लगी क्योंकि सौतेली माँऐं तो हमेशा से ही ऐसी होती हैं। और कुछ समय बीतने के बाद तो वह उसको बिल्कुल ही सहन नहीं कर पायी।

---

[16] Maria, The Wicked Stepmother and the Seven Robbers – a folktale from Italy, Europe. Translated by DL Ashliman from German "Maria, Die Stiefinutter Und Die sieben Rauber" written by Laura Gonzenbach in Sicilianische Märchen, aus dem Volksmund gesammelt, vol 1 (2), 1870. Its English version may be read at the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0709.html#youngslave

[17] Maria – name of the girl

एक दिन उसने अपने पति से कहा — "यह मारिया बहुत डबल रोटी[18] खाती है। हम को इसे निकाल देना चाहिये।"

पिता बोला — "मैं अपनी बच्ची को मार नहीं सकता।"

वह स्त्री बोली — "मैं इसको मारने के लिये नहीं कह रही। बस कल तुम इसको अपने साथ खेतों में ले जाओ और फिर इसको वहीं छोड़ आना ताकि यह अपने घर वापस न आ सके।"

अगले दिन उस आदमी ने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "आज हम लोग बाहर खेतों की तरफ जायेंगे तो वहॉ खाने के लिये कुछ ले जायेंगे।"

सो उसके पिता ने एक बहुत बड़ी सी डबल रोटी ली और वे दोनों खेतों की तरफ चल दिये।

मारिया होशियार थी उसने अपनी जेबें भूसे से भर लीं। जब वह अपने पिता के पीछे पीछे जा रही थी तो वह थोड़ा थोड़ा भूसा अपने पीछे पीछे रास्ते पर फेंकती चली आ रही थी।

घंटों चलने के बाद वे एक पहाड़ी के ऊपर आ पहुॅचे। उसके पिता ने वह डबल रोटी उठायी और उस पहाड़ी की चोटी से नीचे फेंक दी और चिल्लाया — "अरे मारिया, बेटी हमारी रोटी तो नीचे गिर गयी।"

[18] This word is always used for Western type of baked bread – see its picture above.

मारिया तुरन्त बोली — "पिता जी मैं नीचे जा कर उसे ले आती हूँ।" सो वह पहाड़ी के नीचे उतरने लगी और नीचे जा कर नीचे गिरी डबल रोटी उठा ली।

पर जब तक वह उसको ले कर ऊपर आयी तब तक उसका पिता तो वहॉ से जा चुका था और मारिया अब वहॉ अकेली खड़ी थी।

अपने पिता को वहॉ न देख कर मारिया रोने लगी क्योंकि उसको मालूम था कि वह जगह उसके घर से बहुत दूर थी और वह एक नयी जगह में अकेली खड़ी थी।

लेकिन तभी उसको अपने गिराये हुए भूसे का ध्यान आया। उसने हिम्मत बटोरी और वह अपने फेंके हुए भूसे को देखती हुई और उसके पीछे चलती चलती रात को काफी देर से अपने घर पहुँच गयी।

घर पहुँच कर वह अपने पिता से बोली — "पिता जी आप मुझे वहॉ अकेले क्यों छोड़ आये थे?"

पिता ने उसको तब तक तसल्ली दी जब तक उसको यह विश्वास नहीं हो गया कि उसके पिता अब उसको अकेला कभी नहीं छोड़ेंगे। पर यह सब देख कर कि मारिया घर वापस लौट आयी उसकी सौतेली मॉ बहुत नाराज हुई।

कुछ दिन बाद उसने अपने पति से फिर कहा कि वह मारिया को फिर से खेतों में ले जाये और फिर से वहॉ छोड़ कर आये।

अगले दिन पिता ने मारिया से फिर कहा कि वे दोनों फिर से खेतों की तरफ जायेंगे।

पिता ने फिर से एक बड़ी सी डबल रोटी ली और मारिया को साथ ले कर खेतों की तरफ चल दिया। पर उस दिन मारिया अपने साथ भूसा ले जाना भूल गयी।

वे लोग फिर से चले और अबकी बार वे एक और ज़्यादा ऊॅचे और ज़्यादा सीधी चढ़ाई वाले पहाड़ की चोटी पर आ पहुॅचे।

मारिया के पिता ने फिर से अपनी डबल रोटी नीचे गिरा दी और मारिया को फिर से उस डबल रोटी को लाने के लिये पहाड़ी के नीचे जाना पड़ा।

पर पिछली बार की तरह से जब वह डबल रोटी ले कर वापस आयी तो उसका पिता वहॉ से जा चुका था और वह फिर से वहॉ अकेली खड़ी रह गयी थी।

अबकी बार वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। रोते रोते वह कभी इधर और कभी उधर घूमती रही। पर इससे उसको कोई रास्ता नहीं मिला बल्कि वह और घने जंगल में ही घुसती चली गयी।

शाम होने को आ गयी तो उसको एक रोशनी दिखायी दी। वह उसी तरफ चल दी और एक छोटे से मकान के सामने आ पहुॅची।

मकान खुला था सो वह उसके अन्दर घुस गयी। अन्दर उसने सात आदमियों के लिये एक खाने की मेज लगी देखी और सात

पलंग बिछे देखे पर वहॉ अन्दर कोई नहीं था। असल में यह मकान सात डाकुओं का था।

तभी वे सात डाकू घर वापस आ गये तो उनको देख कर मारिया छिप गयी। उन डाकुओं ने खाना खाया और शराब पी और सोने चले गये।

अगली सुबह वे सब बाहर चले गये पर उनमें से सबसे छोटा भाई घर की सफाई करने और सबके लिये खाना बनाने के लिये घर पर ही रह गया। जब उसके भाई चले गये तो वह भी खाने का सामान लाने के लिये बाजार चला गया।

घर खाली हो जाने पर मारिया अपने छिपने की जगह से बाहर निकली, घर को झाड़ा बुहारा और उसकी सफाई की। फिर उसने बीन्स पकाने के लिये पानी भरा पतीला आग पर रख दिया और फिर से अपनी पुरानी जगह पर जा कर छिप गयी।

जब वह छोटा भाई बाजार से सामान ले कर घर लौटा तो उसको सब कुछ साफ देख कर बहुत आश्चर्य हुआ।

जब उसके भाई घर लौट कर वापस आये तो उसने उनको भी इस बारे में बताया। यह सुन कर उनको भी बहुत आश्चर्य हुआ पर वह यह न जान सके कि यह सब कैसे हुआ।

अगले दिन उनमें से दूसरे नम्बर का भाई घर में अकेला रहा। जब उसके सब भाई चले गये तो उसने बहाना किया कि वह बाजार जा रहा है पर वह गया नहीं। जा कर एक जगह छिप गया।

उसको बाहर गया देख कर मारिया अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकली और घर की सफाई करने लगी।

मारिया के बाहर निकलते ही वह भाई भी तुरन्त ही अन्दर आ गया। मारिया उस डाकू को देख कर डर गयी और उससे भीख सी मॉगते हुए बोली — "मेहरबानी करके मुझे मारना नहीं।"

डाकू ने उससे पूछा — "पर तुम हो कौन?"

तब उसने उसको अपनी नीच सौतेली मॉ की कहानी बता दी। उसने उसको यह भी बताया कि किस तरीके से उसके पिता ने उसको जंगल में अकेला छोड़ दिया और फिर किस तरीके से वह उनके घर आ पहुॅची और दो दिन तक वहॉ छिपी रही।

डाकू बोला तुमको हमसे डरने की जरूरत नहीं है। तुम हमारे साथ ही हमारी बहिन बन कर रहो। तुम हमारे लिये खाना बनाओ, सिलाई करो और हमारे कपड़े धोओ।

जब उसके सारे भाई शाम को घर आये तो वे सब इस बात से बहुत सन्तुष्ट हुए। सो मारिया वहॉ उन डाकुओं के साथ रहती रही और उनके घर की देखभाल करती रही। वह बहुत ही शान्त रहती और बहुत मेहनत करती थी।

एक दिन वह खिड़की के पास बैठी हुई कुछ सिल रही थी कि एक बुढ़िया उधर आ निकली और उसने उससे भीख मॉगी। मारिया बोली — "मेरे पास तुमको देने के लिये ज़्यादा तो कुछ तो नहीं है

क्योंकि मैं खुद ही बहुत गरीब हूँ पर जो कुछ भी मेरे पास है मैं वह तुमको देती हूँ।"

उस भिखारिन बुढ़िया ने पूछा — "पर तुम इतनी दुखी क्यों हो?" तब मारिया ने उसे बताया कि किस तरह से उसने घर छोड़ा और फिर कैसे यहाँ पहुँची।

असल में वह बुढ़िया मारिया की सौतेली माँ की भेजी हुई थी। वह बुढ़िया वापस मारिया की सौतेली माँ के पास पहुँची और उसको बताया कि मारिया तो अभी ज़िन्दा थी।

जब उस सौतेली माँ ने यह सुना तो वह बहुत नाराज हुई। उसने उस बुढ़िया को एक अँगूठी दी और उसको मारिया को देने के लिये कहा। वह एक जादू की अँगूठी थी।

आठ दिन बाद वह बुढ़िया फिर से मारिया के पास भीख माँगने के लिये आयी। जब मारिया ने उसको कुछ दिया तो वह बोली — "देखो बेटी मेरे पास एक बहुत सुन्दर अँगूठी है। क्योंकि तुम मेरे साथ बहुत अच्छी रही हो इसलिये यह अँगूठी मैं तुमको देना चाहती हूँ।"

मारिया को उस पर कोई शक नहीं हुआ सो उसने वह अँगूठी उससे ले ली और अपनी उँगली में पहन ली। उसको तो पहनते ही वह गिर पड़ी और मर गयी। यह देख कर वह बुढ़िया वहाँ से चली गयी।

शाम को जब डाकू घर वापस आये तो उन्होंने देखा कि मारिया तो फर्श पर पड़ी है।

यह देख कर वे बहुत दुखी हुए। वे उसके लिये बहुत रोये। फिर उन्होंने उसके लिये एक बहुत सुन्दर ताबूत[19] बनाया और उसको उसमें लिटा दिया।

उन्होंने उसको बहुत सुन्दर गहने पहनाये और बहुत सारा सोना उसके ताबूत में भी रखा। उस ताबूत को उन्होंने एक बैलगाड़ी पर रखा और उसको शहर ले गये।

जब वे राजा के महल के पास से गुजर रहे थे तो उन्होंने देखा कि राजा के महल की घुड़साल का दरवाजा खुला हुआ था सो वे उस बैलगाड़ी को उस घुड़साल के अन्दर ले गये। बैलगाड़ी को देख कर घोड़े कुछ परेशान हो गये और हिनहिनाने लगे।

घोड़ों की हिनहिनाहट सुन कर राजा ने अपने कुछ आदमी यह देखने के लिये नीचे भेजे कि उसके घोड़े क्यों हिनहिना रहे थे।

घुड़साल के मालिक ने राजा को बताया कि वहॉ एक बैलगाड़ी आ गयी है इसी लिये वे हिनहिना रहे थे। उस गाड़ी में तो कोई नहीं है पर उसमें एक बहुत ही सुन्दर ताबूत रखा है।

[19] Translated for the word “Coffin” – see its picture above.

राजा ने कहा कि उस ताबूत को उसके कमरे में लाया जाये। जब वह ताबूत उसके कमरे में लाया गया तो उसने उसे खोला। उसने देखा कि उस ताबूत में तो एक बहुत सुन्दर लड़की लेटी हुई है।

उस लड़की को देख कर वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा और उसको वहॉ अकेले नहीं छोड़ सका।

उसने चार बड़ी मोमबत्तियॉ मॅगवायीं और उनको ताबूत के चारों कोनों पर लगा कर जलवा दीं। उसने सबको कमरे से बाहर भेज दिया, कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और अपने घुटनों पर बैठ कर वह फिर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

जब खाने का समय हुआ तो रानी मॉ ने उसको खाने के लिये बुलाया तो वह तुरन्त ही नहीं बोला बल्कि और ज़ोर ज़ोर से रोता रहा। रानी मॉ खुद वहॉ आयी और उसके कमरे का दरवाजा खोलने के लिये खटखटाया पर राजा ने दरवाजा ही नहीं खोला।

रानी मॉ ने तब चाभी के छेद से झॉका तो देखा कि उसका बेटा तो एक लाश के सामने झुका बैठा है। यह देख कर उसने कमरे का दरवाजा तुड़वा दिया।

उसने अन्दर आ कर देखा कि उस ताबूत में तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की लेटी हुई है। उसको इस तरह से देख कर तो उसका खुद का दिल भी पिघल गया।

उसने मारिया के ऊपर झुक कर उसका हाथ पकड़ लिया। उस हाथ में उसने एक सुन्दर सी अँगूठी देखी तो उसको लगा कि इतनी सुन्दर अँगूठी को इस लड़की साथ दफनाने का तो कोई मतलब नहीं है सो उसने उसकी उँगली से वह अँगूठी निकाल ली।

जैसे ही उसने मारिया के हाथ से वह अँगूठी निकाली तो वह तो होश में आ गयी और ज़िन्दा हो गयी। राजा तो यह देख कर बहुत ही खुश हो गया और बोला — "माँ मैं अब इसी से शादी करूँगा।"

रानी माँ ने कहा — "जरूर बेटा। तुम इसी से शादी करना।"

और मारिया की शादी उस राजा से हो गयी और वह रानी बन गयी। दोनों बहुत सालों तक खुशी से रहे और राज किया।

4 क्रिस्टल का ताबूत[20]

स्नो व्हाइट जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक छोटी सी प्यारी सी बेटी थी जो **10–12** साल की थी।

उसका पिता उसको स्कूल भेजता था। और क्योंकि वह दुनियॉ में अकेली थी तो वह उसकी उसकी टीचर से हमेशा बहुत तारीफ करता था।

टीचर ने देखा कि बच्ची की मॉ नहीं थी तो वह उसके पिता से प्यार करने लगी। वह अक्सर उस बच्ची से कहती कि तुम अपने पिता से पूछना कि क्या वह मुझसे शादी करेंगे।

और यह वह उस बच्ची से रोज कहती तो एक दिन उस बच्ची ने अपने पिता से कहा — "मेरी टीचर मुझसे हमेशा पूछती है कि क्या आप उनसे शादी करेंगे?"

पिता एक लम्बी सॉस ले कर बोला — "ओह मेरी बच्ची, अगर मैं दूसरी शादी कर लूँगा तो तुम बहुत मुश्किल में फॅस जाओगी।"

---

[20] The Crystal Casket – a folktale from Italy, Europe. Translated by DL Ashliman taken from "Italian Popular Tales" by Thomas Frederick Crane. 1885. No 21. Its English version may be read at http://www.pitt.edu/~dash/type0709.html#youngslave
This story is a combination of "The Sleeping Beauty" and "Snow White and the Seven Dwarves".

पर वह बच्ची उसके पीछे पड़ी रही तो उसका पिता एक शाम उस टीचर के घर गया। उस टीचर ने जब उसको देखा तो वह बहुत खुश हुई और कुछ ही दिनों में उन्होंने शादी करने का फैसला कर लिया।

बेचारी बच्ची। उसको इतनी बेरहम सौतेली मॉ को ला कर कितना पछताना पड़ा।

वह सौतेली मॉ उसको रोज बाहर छज्जे[21] पर एक बेसिल[22] के पौधे के गमले को पानी देने के लिये भेजती थी। और यह गमला एक ऐसी जगह रखा हुआ था जो उसके लिये बहुत ही खतरनाक जगह थी क्योंकि अगर वह वहॉ से गिर जाती तो सीधी नदी में जा कर गिरती।

एक दिन एक बहुत बड़ी गरुड़ चिड़िया[23] वहॉ आयी और उसने उससे पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

वह बच्ची बेचारी रो रही थी क्योंकि उसको वहॉ से नदी में गिरने का डर लग रहा था।

[21] Translated for the word "Terrace"

[22] Basil – Basil is English name of Tulasee (in India it is called Holy Basil). In Italy it is used as a herb in dishes.

[23] Translated for the word "Eagle Bird" – see its picture above.

गरुड़ चिड़िया फिर बोली — "आओ तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुमको यहॉ से दूर ले जाऊॅगी जहॉ तुम अपनी नयी मॉ के साथ बहुत खुश रहोगी।"

वह बच्ची उस गरुड़ की पीठ पर बैठ गयी और वह गरुड़ चिड़िया उसको ले कर उड़ चली। काफी देर तक उड़ने के बाद वे एक बहुत बड़े मैदान में पहुॅच गये जहॉ क्रिस्टल का एक बहुत बड़ा महल खड़ा था।

गरुड़ ने उस महल का दरवाजा खटखटाया — "दरवाजा खोलो ओ स्त्रियों, देखो मैं तुम लोगों के लिये एक बहुत ही सुन्दर लड़की ले कर आयी हूॅ।"

जब उस महल में रहने वालों ने महल का दरवाजा खोला तो वे उस सुन्दर सी लड़की को देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसको चूमा और फिर प्यार से उसके ऊपर हाथ फेरा। इस बीच दरवाजा बन्द हो गया और सब उस महल के अन्दर शान्ति से रहे।

अब हम उस गरुड़ चिड़िया के पास चलते हैं जो यह सोच रही थी कि वह उस सौतेली मॉ को चिढ़ायेगी।

सो एक दिन वह उड़ कर फिर से उसी छज्जे पर आयी। आज वहॉ वह सौतेली मॉ उस बेसिल के पौधे को पानी दे रही थी।

गरुड़ ने उससे पूछा — "अरे आज तुम इस पौधे को पानी दे रही हो तुम्हारी बेटी कहॉ है?"

सौतेली मॉ बोली — "उॅह, हो सकता है कि वह छज्जे पर से नीचे गिर गयी हो और नदी में गिर गयी हो। मुझे दस दिन से उसके बारे में कुछ पता नहीं।"

गरुड़ बोली — "तुम कितनी बेवकूफ हो। यह देख कर कि तुम उसके साथ कितना बुरा बरताव कर रही थी उसको मैं अपनी परियों के पास ले गयी और वह अब वहॉ पर बहुत अच्छे से रह रही है।" यह बता कर वह गरुड़ चिड़िया वहॉ से उड़ गयी।

सौतेली मॉ को यह सुन कर बहुत गुस्सा आया और जलन भी हुई।

उसने शहर से एक जादूगरनी[24] को बुलाया और उससे कहा — "मेरी सौतेली बेटी अभी ज़िन्दा है और वह गरुड़ की कुछ परियों के घर में है। यह गरुड़ चिड़िया मेरे छज्जे पर अक्सर आती रहती है। अब तुम मेरा एक काम करो कि तुम मेरी इस सौतेली बेटी को किसी तरह से मार दो।

क्योंकि मुझे डर है कि वह किसी भी दिन यहॉ वापस आ जायेगी और फिर अगर मेरे पति को यह पता चल गया तो वह मुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा।"

वह जादूगरनी बोली — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो।"

[24] Translated for the word "Witch"

जादूगरनी ने क्या किया कि उसने एक बहुत सुन्दर सी मिठाई की टोकरी बनायी जिसमें उसने एक टोटका[25] भी रख दिया।

उसमें उसने उसके पिता के नाम से एक चिट्ठी लिख कर रखी कि जैसे ही उसके पिता को यह पता चला कि वह कहॉ है वह यह मिठाई की टोकरी उसके लिये भेज रहा है। वह यह जान कर बहुत खुश है कि वह परियों के साथ रह रही है। वह खुद भी परियों के साथ है।

अब हम उस जादूगरनी को यहीं छोड़ते हैं जो उस लड़की के पास जाने की तैयारी कर रही है और अरमैलीना[26] के पास चलते हैं।

एक दिन परियों ने अरमैलीना से कहा — "देखो अरमैलीना, हम लोग चार दिन के लिये बाहर जा रहे हैं। इस बीच तुम अपना ख्याल ठीक से रखना। इस महल का दरवाजा तुम किसी के लिये भी नहीं खोलना क्योंकि तुम्हारी सौतेली मॉ तुम्हारे खिलाफ कुछ साजिश रच रही है।"

अरमैलीना ने उनसे वायदा किया कि वह उनके पीछे किसी के लिये भी महल का दरवाजा नहीं खोलेगी और कहा — "मेरे बारे में

[25] Translated for the word "Charm". It may be anything and can be worn anywhere on the body – see the picture of such a charm, one of its kind, above

[26] Ermellina – the name of the girl.

ज़्यादा चिन्ता न करना। मैं ठीक हूँ और मेरी सौतेली मॉ का अब मुझसे कोई लेना देना नहीं है।"

परियॉ तो उसको यह कह कर चली गयीं पर ऐसा नहीं था जैसा कि अरमैलीना ने सोच रखा था। अगले ही दिन जब अरमैलीना महल में अकेली थी तो किसी ने महल का दरवाजा खटखटाया तो वह बोली — "जाओ यहॉ से। मैं किसी के लिये दरवाजा नहीं खोलती।"

पर इस बीच दरवाजे की खटखटाहट की आवाज और तेज़ हो गयी तो उसकी उत्सुकता बढ़ गयी कि दरवाजे पर कौन हो सकता है जो इतनी ज़ोर से दरवाजा खटखटा रहा है। सो उसने खिड़की में से बाहर झॉका।

उसने क्या देखा कि बाहर उसके अपने घर की एक नौकरानी खड़ी है। असल में वह जादूगरनी उसके घर की एक नौकरानी का रूप रख कर वहॉ आयी थी।

वह बाहर से ही बोली — "ओ मेरी प्यारी अरमैलीना, तुम्हारे पिता तुम्हारे दुख में बहुत रो रहे हैं क्योंकि वह तो यह विश्वास कर ही चुके थे कि तुम मर चुकी हो। पर वह जो गरुड़ चिड़िया तुमको वहॉ से उठा कर ले गयी थी उसने उनको बताया कि तुम यहॉ परियों के पास हो।

तुम्हारे पिता ने जब तुम्हारे ज़िन्दा होने की खबर सुनी तो उनको लगा कि शायद तुमको किसी चीज़ की जरूर ही जरूरत होगी सो उन्होंने तुम्हारे लिये यह छोटी सी मिठाई की टोकरी भेजी है।"

अरमैलीना ने अभी भी दरवाजा नहीं खोला था। पर वह नौकरानी अभी भी उससे नीचे आने और दरवाजा खोलने और अपने पिता की चिट्ठी लेने के लिये जिद करती रही पर उसने फिर भी दरवाजा नहीं खोला और कहा — "मुझे कुछ नहीं चाहिये।"

पर आखिर छोटी लड़कियॉ तो मिठाई की बहुत शौकीन होती ही हैं सो फिर वह मिठाई के नाम से ललचा गयी। वह नीचे उतरी और उसने महल का दरवाजा खोल दिया।

जादूगरनी ने उसको वह मिठाई की टोकरी दे दी और उसमें से एक मिठाई निकाल कर उसको तोड़ कर उसको देते हुए कहा — "लो यह खाओ।"

इस मिठाई में उसने पहले से ही जहर मिला रखा था। सो जैसे ही अरमैलीना ने उसे खाया तो वह जादूगरनी तो वहॉ से गायब हो गयी। और उधर अरमैलीना ने बड़ी मुश्किल से दरवाजा बन्द किया होगा कि वह वहीं नीचे सीढ़ियों पर ही गिर पड़ी।

जब परियॉ घर वापस लौटीं तो उन्होंने दरवाजा खटखटाया पर किसी ने दरवाजा ही नहीं खोला तो उनको लगा कि किसी ने जरूर ही वहॉ कोई शरारत की है सो वे रोने लगीं।

तब उन परियों की सरदार ने कहा — "अगर कोई दरवाजा नहीं खोल रहा है तो हमको यह दरवाजा तोड़ देना चाहिये।"

उन्होंने ऐसा ही किया। जब दरवाजा तोड़ा गया तो उन्होंने देखा कि अरमैलीना तो सीढ़ियों पर मरी पड़ी है।

अरमैलीना की कई दोस्त जो उसको बहुत प्यार करती थीं उन्होंने अपनी सरदार से प्रार्थना की कि वह उसको ज़िन्दा कर दे पर उसने उसको ज़िन्दा करने से मना कर दिया क्योंकि उसने उसका कहा नहीं माना था।

पर उनमें से कोई न कोई उससे तब तक प्रार्थना करती ही रही जब तक वह मान नहीं गयी।

सो उसने अरमैलीना का मुॅह खोला और उसके मुॅह में से मिठाई का एक टुकड़ा निकाला जो उसने अभी तक निगला नहीं था। मिठाई का टुकड़ा निकालते ही वह ज़िन्दा हो गयी।

उसको ज़िन्दा देख कर उसके दोस्त तो बहुत खुश हो गये पर परियों की सरदार ने उसके इस काम को ठीक नहीं समझा तो अरमैलीना से उसने फिर से वायदा लिया कि वह ऐसा फिर नहीं करेगी।

कुछ दिन बाद एक बार फिर ऐसा मौका आया कि उन परियों को फिर से बाहर जाना पड़ा।

उनकी सरदार ने अरमैलीना से फिर कहा — "याद रखना अरमैलीना अबकी बार किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलना।

पहली बार तो मैंने तुमको ज़िन्दा कर दिया था मगर अबकी बार अगर ऐसा कुछ हुआ तो मैं कुछ नहीं करूँगी।"

अरमैलीना ने फिर वही कहा — "आप बिल्कुल चिन्ता न करें अबकी बार में किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलूँगी।"

पर ऐसा फिर एक बार हुआ। वह गरुड़ चिड़िया अरमैलीना की सौतेली मॉ का गुस्सा और जलन बढ़ाने के लिये फिर से उसके पास जा पहुँची और उसको बताया कि अरमैलीना तो अभी भी ज़िन्दा थी।

सौतेली मॉ ने उसको ऊपर से तो कह दिया कि वह गरुड़ चिड़िया उससे झूठ बोल रही थी पर फिर भी उसने उस जादूगरनी को दोबारा से बुलवाया और उससे कहा कि या तो वह उसे मार दे नहीं तो वह उसे मार देगी।

उस बुढिया को लगा कि अबकी बार तो वह पकड़ी गयी। उसने उस सौतेली मॉ से कहा कि वह अरमैलीना के लिये एक बहुत सुन्दर पोशाक खरीद दे – सबसे सुन्दर जो भी उसको मिले।

फिर उसने अरमैलीना की दरजिन का वेश बनाया और उसकी वह पोशाक ले कर वहॉ से चल दी।

वह फिर अरमैलीना के महल पहुँची और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया और बोली — "खोलो खोलो दरवाजा खोलो। मैं हूँ तुम्हारी दरजिन।"

अरमैलीना ने खिड़की से बाहर झॉका तो उसने देखा कि बाहर तो उसकी दरजिन खड़ी है। उसको वहॉ देख कर पहले तो वह कुछ परेशान हो गयी कि वह वहॉ कैसे आ गयी पर इतने में ही उस दरजिन ने कहा — "मैं तुम्हारी दरजिन हूॅ। मैं यह तुम्हारी पोशाक तुम पर नापने के लिये लायी हूॅ।"

अरमैलीना बोली — "नहीं नहीं। मैं एक बार पहले ही धोखा खा चुकी हूॅ और नहीं खा सकती।"

दरजिन बोली — "पर मैं वह पुरानी वाली बुढ़िया नहीं हूॅ। मैं तो तुम्हारी दरजिन हूॅ। तुम तो मुझे जानती हो। मैं हमेशा ही तुम्हारे लिये पोशाकें बनाती हूॅ।"

इस तरह से जब वह बुढ़िया उसके पीछे पड़ी तो अरमैलीना सढ़ियों से नीचे उतरी। दरजिन ने उसको वह पोशाक पहन कर देखने के लिये दी। वह जब उसको पहन कर उसके बटन ही लगा रही थी कि वह दरजिन वहॉ से भाग ली।

अरमैलीना ने दरवाजा बन्द किया और सीढ़ियॉ चढ़ने लगी पर वह ऊपर तक नहीं जा पायी और बीच में ही गिर गयी और मर गयी।

परियॉ जब घर वापस लौटीं तो उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया पर पिछली बार की तरह से अबकी बार भी किसी ने दरवाजा नहीं खोला तो अरमैलीना की दोस्तों ने फिर से रोना शुरू कर दिया।

परियों की सरदार बोली — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह हमें फिर से धोखा देगी। इस बार मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं है। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर सकती।"

उनको फिर से दरवाजा तोड़ना पड़ा। वहॉ उन्होंने देखा कि वह बेचारी लड़की वह सुन्दर सी पोशाक पहने सीढ़ियों पर बेजान पड़ी है। इस बार वे सब रोयीं क्योंकि वे सब उसको बहुत प्यार करती थीं।

अब उसके लिये कुछ नहीं किया जा सकता था। परियों की सरदार ने अपनी जादू की छड़ी हिलायी और एक सुन्दर सा ताबूत[27] लाने का हुकुम दिया। वह ताबूत चारों तरफ से हीरों से जड़ा था।

फिर उन्होंने एक सुन्दर सी सोने और फूलों की माला बनायी और उस लड़की को पहना दी और उसको ताबूत में लिटा दिया। वह ताबूत इतना कीमती और इतना सुन्दर था कि देखने में ही वह बहुत सुन्दर लगता था।

परियों की सरदार ने फिर एक बार अपनी जादू की छड़ी घुमायी तो उससे उसने एक बहुत बढ़िया घोड़ा मॅगवाया जैसा कि किसी राजा के पास भी नहीं था।

[27] Translated for the word "Casket" – see its picture above.

उन सबने मिल कर वह ताबूत उस घोड़े की पीठ पर रखा और शहर के चौराहे पर ले चले। परियों की सरदार ने कहा — "तुम लोग चलते ही जाना जब तक तुमसे कोई यह न कहे "रुक जाओ भगवान के लिये रुक जाओ क्योंकि मैंने अपना घोड़ा तुम्हारे लिये खो दिया है।"

अब हम परियों को यहीं छोड़ते हैं और घोड़े की तरफ चलते हैं जो अरमैलीना का ताबूत लिये हुए जा रहा था। वह घोड़ा तो अपनी पूरी गति से भागा जा रहा था। सोचो ज़रा उस समय वहॉ कौन आया? वहॉ आया एक राजा का बेटा।

उसने जब इतनी तेज़ घोड़ा भागता देखा तो उसकी पीठ पर रखी चीज़ को वह पहचान नहीं सका सो उसने सोचा कि देखा जाये कि उस घोड़े की पीठ पर क्या रखा है।

सो उसने अपने घोड़े को उकसाया और उस घोड़े के पीछे पीछे भाग लिया। वह अपने घोड़े को उतना ही तेज़ भगाना चाहता था जितना कि वह घोड़ा भाग रहा था सो उसने उसको इतना मारा कि उसका घोड़ा ही मर गया।

उसने उस मरे हुए घोड़े को सड़क पर छोड़ा और वह खुद पैदल ही उसके पीछे भाग लिया। पर वह उसका पीछा भी बहुत दूर तक न कर सका और चिल्लाया — "रुक जाओ भगवान के लिये रुक जाओ क्योंकि मैंने अपना घोड़ा तुम्हारे लिये खो दिया है।"

ताबूत वाला घोड़ा उसी समय रुक गया क्योंकि यही वे शब्द थे जिन पर उसको रुकना था। जब राजकुमार ने उस बढ़िया से ताबूत में एक सुन्दर लड़की को देखा तो वह अपने घोड़े को तो भूल गया और उसके घोड़े को शहर ले गया।

राजा की मॉ को पता था कि उसका बेटा शिकार के लिये गया हुआ था पर जब उसने घोड़े के ऊपर कुछ रखा देखा तो उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या सोचे कि वह क्या ले कर आया था। राजा के पिता नहीं थे इसलिये इस समय वही राजा था।

वह महल पहुँचा और घोड़े पर से उस ताबूत को उतारने के लिये कहा। वह ताबूत घोड़े पर से उतार कर उसके कमरे में ले जाया गया। वहॉ उसने अपनी मॉ को बुलाया और कहा — "मॉ मैं गया तो शिकार के लिये था पर मुझे तो एक पत्नी मिल गयी।"

मॉ ने पूछा — "पर वह है कौन? एक गुड़िया या एक लाश?"

राजा बोला — "मॉ तुम इस बात की चिन्ता न करो बस यह समझो कि यह मेरी पत्नी है।"

यह सुन कर उसकी मॉ हॅस पड़ी और अपने कमरे में चली गयी। नहीं तो वह बेचारी और क्या करती?

अब यह राजा न तो शिकार के लिये कहीं जाता था, न कहीं और जाता। बल्कि खाना खाने के लिये मेज पर भी नहीं जाता था और अपना खाना वहीं अपने कमरे में ही मॅगवा लेता था।

यह सब चल रहा था कि किस्मत की बात कि लड़ाई छिड़ गयी और राजा को लड़ने के लिये जाना पड़ा।

उसने अपनी मॉ को बुलाया और उससे कहा — "मुझे दो दासियॉ ऐसी चाहिये मॉ जो मेरे भरोसे की हों जो मेरे पीछे इस ताबूत की देख भाल करें। क्योंकि मेरे आने तक अगर इस ताबूत को कुछ हुआ तो मैं उन दोनों दासियों को मरवा दूँगा।"

राजा की मॉ अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी सो बोली — "जाओ बेटा तुम जाओ। तुम बिल्कुल न डरो। इस ताबूत की देख भाल मैं खुद करूँगी।"

जाने से पहले कई दिनों तक वह रोता रहा कि वह अपना इतना कीमती खजाना किसी दूसरे के ऊपर छोड़ कर जा रहा है पर वह इसमें कुछ नहीं कर सकता था और उसको जाना ही पड़ा।

जाने के बाद अपनी चिट्ठियों में वह केवल अपनी पत्नी को अपनी मॉ की बात मानने के लिये ही लिखता रहा।

अब हम मॉ की तरफ चलते हैं तो मॉ ने अपने बेटे की बात पर कुछ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया यहॉ तक कि उसने उस ताबूत के ऊपर जमी धूल भी साफ नहीं करवायी।

और फिर एक दिन अचानक राजा की एक चिट्ठी आयी कि राजा जीत गया और वह कुछ ही दिनों में घर लौट रहा है। तब रानी मॉ ने दासियों को बुलाया और कहा कि "हम तो बरबाद हो गये।"

दासियों ने पूछा — "क्या हुआ रानी मॉ?"

रानी मॉ बोली — "मेरा बेटा कुछ ही दिनों में लौट रहा है और इतने दिनों में हमने उस गुड़िया की क्या देखभाल की है?"

वे बोलीं — "यह तो सच है। हम अब जा कर उसका चेहरा साफ करते हैं।"

वे उस कमरे में गयीं जहॉ वह ताबूत रखा था। वहॉ उन्होंने देखा कि उस गुड़िया का चेहरा तो धूल और मक्खियों के कणों से ढका हुआ था। उन्होंने एक स्पंज लिया और उसको पानी में भिगो कर उससे उसका चेहरा साफ करने लगीं।

उसका चेहरा साफ करते समय उस स्पंज के पानी में से पानी की कुछ बूँदें उस गुड़िया की पोशाक पर गिर पड़ीं। इससे उसकी पोशाक पर धब्बे पड़ गये। यह देख कर वे बेचारी दासियॉ रोने लगीं और रोते रोते रानी मॉ के पास सलाह के लिये गयीं कि वे अब क्या करें।

रानी मॉ बोली — "तुमको मालूम नहीं कि क्या करना चाहिये? जाओ और जल्दी से दरजिन को बुला कर लाओ और उसको इसके लिये ऐसी ही एक पोशाक इसके नाप की खरीद कर लाने को कहो। और इससे पहले कि मेरा बेटा आ जाये इसकी यह पोशाक उतार कर इसको नयी पोशाक पहना दो।"

दासियों ने ऐसा ही किया। वे कमरे में गयीं और उसकी पोशाक के बटन खोलने शुरू किये। पर जैसे ही उन्होंने उसकी

पोशाक में से उसकी एक बॉह निकाली कि अरमैलीना ने ऑखें खोल दीं।

उसको ऑखें खोलते देख कर दासियॉ तो डर के मारे उछल पड़ीं। पर उनमें से एक जो बहुत हिम्मत वाली थी बोली — "मैं तो स्त्री हूॅ और यह भी स्त्री है इसलिये यह मुझे खायेगी नही।" सो उसने उसकी वह पोशाक उतार दी।

पोशाक के उतरते ही अरमैलीना उस ताबूत में से बाहर निकल कर यह देखने के लिये चलने की कोशिश करने लगी कि वह कहॉ है।

दासियॉ उसके कदमों पर गिर पड़ीं और उससे पूछा कि वह कौन है। उस बेचारी ने तब उनको अपनी पूरी कहानी सुनायी और पूछा कि वह कहॉ है।

इस पर दासियॉ रानी मॉ को बुला लायीं। रानी मॉ ने उसको सब बता दिया और वह लड़की बेचारी यही सोच सोच कर चुपचाप रोती रही कि उन परियों ने उसके साथ क्या क्या किया।

राजा भी बस अब आने ही वाला था सो रानी मॉ ने उस गुड़िया से कहा — "इधर आओ और मेरी सबसे अच्छी वाली एक पोशाक पहन लो।" और उसने उसको एक रानी की तरह सजा दिया।

तभी उसका बेटा आ गया। सबने मिल कर उस गुड़िया को एक छोटे से कमरे में छिपा दिया ताकि कोई उसे देख न सके।

राजा बहुत खुशी खुशी आ रहा था। उसके आगे आगे जीत के बाजे बजते आ रहे थे। लोग झंडे फहराते आ रहे थे।

पर उसको इन सबमें कोई रुचि नहीं थी। वह तो बस महल में आते ही अपने उस कमरे की तरफ गुड़िया को देखने के लिये दौड़ा गया जिसमें वह ताबूत रखा छोड़ गया था।

दासियॉ उसके पैरों पर गिर पड़ीं और बोलीं — "राजा साहब राजा साहब, उस गुड़िया के शरीर में से तो इतनी बदबू आने लगी थी कि हम लोग उस महल में रह ही नहीं सकते थे इसलिये हमें मजबूरन उनको उसको दफ़न करना पड़ा।"

राजा उनका कोई बहाना सुनने को तैयार नहीं था। उसने तुरन्त ही महल के दो नौकर बुलवाये और उनसे उन दासियों के लिये फॉसी का तख्ता बनाने के लिये कहा।

उसकी मॉ ने उसको शान्त करने की बहुत कोशिश की पर वह सब बेकार। उसने बार बार कहा कि वह तो एक मरी हुई लड़की थी उसकी तुम इतनी चिन्ता क्यों करते हो पर राजा की कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

वह चिल्ला कर बोला — "नहीं नहीं। मैं कोई वजह नहीं सुनना नहीं चाहता। वह मरी थी या ज़िन्दा थी यह सब आप सबको मेरे ऊपर छोड़ देना चाहिये था। मुझे वह चाहिये।"

आखिर जब रानी मॉ ने देखा कि वह उन दासियों के लिये फॉसी का फन्दा तैयार करवाने पर तुला हुआ था तो उसने एक

छोटी सी घंटी बजायी तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की जो अब गुड़िया नहीं रह गयी थी वहॉ आयी। वह इतनी सुन्दर थी जैसी कि पहले कभी किसी ने कोई और लड़की देखी नहीं थी।

राजा तो उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गया बोला — "यह कौन है?"

तब रानी मॉ, दासियॉ और अरमैलीना सबने मिल कर उसको सब कुछ बताया।

वह बोला — "मॉ पहले जब यह मरी हुई थी तो मैं इसको केवल पसन्द करता था और अपनी पत्नी कहता था पर अब मैं इसको प्यार करता हूॅ और सचमुच में इसको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूॅ।"

रानी मॉ बोली — "हॉ बेटा, मेरी भी यही इच्छा है कि अब तुम इससे शादी कर लो।"

कुछ दिन बाद ही उन दोनों की शादी हो गयी और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

5 सोने का पेड़ और चॉदी का पेड़[28]

स्नो व्हाइट जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के स्कौटलैंड देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक देश में एक राजा और रानी रहते थे। रानी का नाम था चॉदी का पेड़। उनके एक बेटी थी जिसका नाम था सोने का पेड़।

एक दिन मॉ और बेटी दोनों एक घाटी की तरफ गयीं। वहॉ एक कुँआ था और उस कुँए में एक भूत[29] रहता था। वहॉ जा कर चॉदी का पेड़ बोली — "ओ भूत, ओ छोटे पतले आदमी, क्या मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हूँ?"

वह भूत बोला — "ओह नहीं, तुम दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हो।"

"तो फिर कौन है?"

"ओह, वह तो सोने का पेड़ है तुम्हारी बेटी।"

---

[28] Gold-Tree and Silver-Tree – a folktale from Scotland, Europe. Adapted from the Wikipedia's article "Gold-Tree and Silver-Tree".
This folktale has been taken from the book "Celtic Fairy Tales", by Joseph Jacobs. 1892. This whole book is available at the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/celt/cft/cft14.htm .

[29] Translated for the word "Trout"

यह सुन कर चॉदी का पेड़ गुस्से में भर कर घर चली गयी और जा कर अपने पलंग पर लेट गयी। उसने कहा कि वह अपने पलंग से तब तक नहीं उठेगी जब तक उसको सोने के पेड़ यानी उसकी बेटी का दिल और जिगर खाने के लिये नहीं मिल जाता।

रात को राजा घर आया तो उसने अपनी पत्नी बारे में पूछा तो उसे बताया गया कि उसकी पत्नी तो बहुत बीमार है और वह अपने कमरे में लेटी है।

सो वह वहॉ गया जहॉ रानी लेटी हुई थी। उसने उसकी तबियत का हाल पूछा कि उसकी क्या तबियत खराब है।

रानी बोली — "मुझे केवल एक ही चीज़ ठीक कर सकती है, अगर तुम चाहो तो।"

राजा बोला — "ऐसी कोई काम नहीं है जो मैं तुम्हारे लिये कर सकता हूॅ और वह मैं न करूॅ। अगर मेरे बस में होगा तो मैं जरूर करूॅगा। तुम बोलो तो।"

रानी बोली — "अगर मुझे मेरी बेटी का दिल और जिगर खाने को मिल जाये तो मैं ठीक हो जाऊॅगी।"[30]

इसी समय कुछ ऐसा हुआ कि किसी दूसरे बड़े राज्य के राजा का बेटा वहॉ आया और सोने के पेड़ से शादी करने की इच्छा प्रगट

[30] [My Note: seems very odd that a mother can express her desire to eat her own only child, although it is not impossible as sometimes somebody's ego can force her to act like this that a mother can express her desire to eat her own only child. The original story "Snow White and Seven Dwarf" is also unnatural as the girl's mother is also her own mother.]

की। राजा मान गया और उसने अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार से कर दी। राजकुमार सोने के पेड़ को ले कर वहॉ से अपने देश चला गया।

उनके जाने के बाद राजा ने अपने आदमियों को एक पहाड़ी पर भेजा कि वे एक बकरा ले कर आयें। जब वे बकरा ले आये तो राजा ने उसका दिल और जिगर रानी को यह कह कर दे दिया कि वे सोने के पेड़ के दिल और जिगर थे। रानी ने उनको खुशी से खा लिया और वह ठीक हो गयी।

एक साल बाद चॉदी का पेड़ फिर से उसी घाटी में गयी जहॉ वह कुॅआ था और जिस कुॅए में वह भूत रहता था। वहॉ जा कर उसने फिर उस भूत से पूछा — "ओ भूत ओ छोटे पतले आदमी, क्या मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हूॅ?"

वह भूत बोला — "ओह नहीं नहीं, तुम नहीं हो।"

"तो फिर कौन है?"

"क्यों? वह तो सोने का पेड़ है तुम्हारी बेटी।"

रानी बोली — "पर वह तो बहुत दिन पहले ज़िन्दा थी। एक साल पहले तो मैंने उसको मरवा कर उसका दिल और जिगर खा लिया था।"

भूत बोला — "ओह नहीं नहीं, वह मरी नहीं है। वह तो अभी भी ज़िन्दा है। वह तो दूसरे बड़े देश के राजकुमार से शादी करके उसके देश में रह रही है।"

यह सुन कर चॉदी का पेड़ दुखी हो कर घर चली आयी और राजा से उसका बड़ा वाला पानी का जहाज़ तैयार कराने को कहा। उसने कहा कि उसको अपनी बेटी सोने का पेड़ को देखे बहुत दिन हो गये हैं सो वह अपनी बेटी को देखने जाना चाहती है।[31]

रानी के हुकुम के अनुसार जहाज़ तैयार किया गया और वह वह जहाज़ ले कर चल दी। वह जहाज़ खुद ही चला रही थी। वह बहुत अच्छा जहाज़ चलाती थी सो वह बहुत जल्दी ही उस जगह आ पहुॅची जहॉ सोने का पेड़ रहती थी।

राजकुमार उस समय शिकार खेलने के लिये पहाड़ों पर गया हुआ था। सोने के पेड़ को पता चल गया कि उसके पिता का जहाज़ उधर ही आ रहा था। उसने अपने नौकरों से कहा कि उसकी मॉ वहॉ आ रही थी और वह वहॉ आ कर उसको मार देगी।

नौकर बोले — "आप घबराइये नहीं। हम आपको एक ऐसे कमरे में बन्द कर देंगे जहॉ वह आपको कभी भी नहीं ढूॅढ पायेगी।" सो उसके नौकरों ने ऐसा ही किया।

[31] [My Note: Sometimes these stories have no logic – when the mother had already eaten her daughter's heart and liver one year before and the king himself gave them to her, how could she go to see her daughter now – after one year? Why didn't the King tell her that "you have already killed her one year ago. To whom you want to go to see now?" – well this is story…]

जब चॉदी का पेड़ किनारे पर आयी तो उसने चिल्लाना शुरू किया — " आ जाओ ओ प्यारी बेटी, अपनी मॉ से मिलने आ जाओ। देखो, वह खुद तुमसे मिलने आयी है।"

सोने का पेड़ चिल्लायी कि वह एक कमरे में बन्द थी और वह उससे मिलने के लिये नहीं आ सकती थी। उसकी मॉ बोली — "क्या तुम चाभी के छेद में से अपनी छोटी उॅगली भी बाहर नहीं निकाल सकतीं ताकि तुम्हारी मॉ उसको चूम सके?"

सो सोने के पेड़ ने चाभी के छेद से अपनी छोटी उॅगली बाहर निकाल दी। उसकी मॉ ने तुरन्त ही उसकी उॅगली में एक जहरीली सुई चुभो दी। सुई के चुभते ही सोने का पेड़ मर गयी।

जब राजकुमार घर आया तो उसने देखा कि उसकी सोने का पेड़ तो मरी पड़ी है। उसको मरा हुआ पा कर तो वह बहुत दुखी हो गया। उसने देखा कि वह तो मरने के बाद भी बहुत सुन्दर लग रही थी तो उसने उसको दफनाया नहीं बल्कि एक कमरे में बन्द कर दिया जहॉ कोई नहीं जा सकता था।

कुछ समय बीत गया और इस बीच राजकुमार ने दूसरी शादी कर ली। अब सारा महल इस नयी रानी के कब्जे में था, सिवाय एक कमरे के। और उस कमरे की चाभी वह राजकुमार हमेशा अपने पास रखता था।

नयी रानी को यह जानने की बहुत उत्सुकता थी कि ऐसा उस कमरे में क्या था जिसको राजकुमार हमेशा बन्द रखता था और

उसकी चाभी भी अपने पास रखता था। पर उसको उस कमरे की चाभी कभी नहीं मिलती थी क्योंकि राजकुमार उसे हमेशा अपने पास ही रखता था।

एक दिन राजकुमार वह चाभी अपने साथ ले जाना भूल गया और यही मौका था कि वह चाभी नयी रानी को मिल गयी। उसने तुरन्त ही वह चाभी उठायी और उस बन्द कमरे की तरफ चल दी।

उसने दरवाजा खोला तो क्या देखती है कि वह कमरा तो खाली पड़ा था, सिवाय एक बहुत सुन्दर लड़की के जो वहॉ लेटी हुई थी। नयी रानी ने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी।

वह उसको जगाये बिना न रह सकी। उसने उसको इधर उधर हिला कर जगाने की कोशिश की पर वह नहीं जागी। इस बीच उसने देखा कि उसकी छोटी उॅगली में एक सुई चुभी हुई थी।

उसने वह सुई उसकी उॅगली से खींच ली और लो, सोने का पेड़ तो उठ कर बैठी हो गयी – उतनी ही सुन्दर जितनी वह पहले थी।

रात को जब राजकुमार घर आया तो वह बहुत दुखी था। उस दिन उसको कोई शिकार भी हाथ नहीं लगा था। राजकुमार को उदास देख कर उसकी नयी रानी उसको खुश करने के लिये बोली — "तुम मुझको क्या दोगे अगर मैं तुमको हॅसा दूॅ तो?"

राजकुमार को कुछ समझ में नहीं आया तो वैसे ही उदास मूड में बोला — "तुम मुझे क्या दे सकती हो? मुझे कोई चीज़ खुश नहीं

कर सकती सिवाय इसके कि मेरी सोने का पेड़ फिर से ज़िन्दा हो जाये।"

रानी बोली — "अच्छा तो जाओ नीचे वाले कमरे में जाओ और देखो कि तुम्हारी सोने का पेड़ ज़िन्दा है।"

राजकुमार को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ तो वह तुरन्त ही नीचे वाले कमरे की तरफ भागा भागा गया। वहॉ जा कर तो उसको अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसकी सोने का पेड़ तो वहॉ ज़िन्दा बैठी थी।

उसकी खुशी का ठिकाना न रहा और उसने सोने के पेड़ के ज़िन्दा हो जाने की खुशी में महल में बहुत खुशियॉ मनायीं।

नयी रानी बोली — "क्योंकि यह तुम्हारी पहली पत्नी है इस लिये तुम्हारे लिये यही अच्छा रहेगा कि तुम इसी के साथ रहो। मैं अब यहॉ से चलती हूँ।"

राजकुमार बोला — "नहीं नहीं यह कैसे हो सकता है। तुमने तो इसको ज़िन्दा किया है इसलिये मैं तुम दोनों को अपने पास रखूँगा अगर तुमको कोई एतराज न हो तो।"

नयी रानी को कोई एतराज नहीं था सो अब राजकुमार अपनी दो दो रानियों के साथ रहने लगा।

एक साल बाद चॉदी का पेड़ फिर अपनी उसी घाटी में गयी जहॉ वह कुँआ था और जिस कुँए में वह भूत रहता था। वहॉ जा

कर उसने फिर उस भूत से पूछा — "ओ भूत, ओ छोटे पतले आदमी, क्या मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हूँ?"

वह भूत बोला — "ओह नहीं तुम नहीं हो।"

"तो फिर कौन है?"

"क्यों? वह तो सोने का पेड़ है? तुम्हारी बेटी।"

रानी बोली — "पर वह तो बहुत दिन पहले ज़िन्दा थी। एक साल पहले मैंने उसकी उँगली में जहरीली सुई चुभो कर उसको मार दिया था।"

"पर वह मरी नहीं वह तो अभी भी ज़िन्दा है।" रानी यह सुन कर दुखी हो कर घर लौट आयी।

उसने फिर से राजा से उसका बड़ा वाला पानी का जहाज़ तैयार करने के लिये कहा। उसने कहा कि उसको अपनी बेटी सोने के पेड़ को देखे बहुत दिन हो गये हैं सो वह अपनी बेटी को देखने जाना चाहती है।

रानी के हुकुम के अनुसार एक बार फिर जहाज़ तैयार किया गया और वह वह जहाज़ ले कर फिर वहीं चल दी। वह वह जहाज़ खुद ही चला रही थी। वह बहुत अच्छा जहाज़ चलाती थी सो वह बहुत जल्दी ही उस जगह आ पहुँची जहॉ सोने का पेड़ रहती थी।

इत्तफाक से उस दिन भी राजकुमार शिकार के लिये पहाड़ी पर गया हुआ था। राजकुमारी को पता चल गया कि उसके पिता का जहाज़ उधर की तरफ आ रहा था।

उसने राजकुमार की दूसरी पत्नी से कहा — "मेरी माँ इधर आ रही है। वह मुझे मार डालेगी।"

दूसरी पत्नी बोली — "तुम डरो नहीं। ऐसा कभी नहीं होगा। कभी नहीं। हम लोग उससे मिलने के लिये वहीं जायेंगे।"

चाँदी का पेड़ जब किनारे पर आयी तो उसने वहीं से पुकारा — "ओ मेरी प्यारी बेटी सोने का पेड़, आओ यहाँ आओ। देखो तुम्हारी माँ तुम्हारे लिये बहुत कुछ स्वदिष्ट पीने के लिये ले कर आयी है।"

नयी रानी बोली — "हमारे देश की यह रीति है कि जो कोई कुछ खाने पीने के लिये ले कर आता है वह पहले उसे खुद ही खा पी कर देखता है इसलिये इसको पहले आप पियें।"

अब चाँदी का पेड़ तो उसको पी नहीं सकती थी क्योंकि वह तो सोने के पेड़ को मारने के लिये था। अगर वह उसको पीती तो वह खुद मर जाती पर नयी रानी की बात सुन कर उसने उस गिलास में अपना मुँह लगा लिया पर पिया नहीं।

यह देख कर नयी रानी ने उसका गिलास थोड़ा सा और ऊँचा कर दिया जिससे उस गिलास में से थोड़ा सा रस उसके गले में चला गया और वह वहीं मर गयी।

चॉदी के पेड़ के जहाज़ वाले उसकी लाश को वापस ले गये और राजकुमार की दोनों पत्नियॉ फिर खुशी खुशी शान्ति से बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहीं।

6 सफेद राजकुमारी और सात बौने[32]

सफेद राजकुमारी और सात बौने की यह कहानी यूरोप के देशों की बहुत ही लोकप्रिय और मुख्य कहानी है पर यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के रूस देश की कहानियों से ली है।

एक समय की बात है कि ठंड के दिन थे। आसमान से बरफ के छोटे छोटे टुकड़े गिर रहे थे।

ऐसे में एक रानी अपने महल में खिड़की के पास बैठी कसीदाकारी कर रही थी। वह खिड़की काले आबनूस की लकड़ी की बनी थी।

अपने काम के बीच बीच में वह कभी कभी बरफ गिरती भी देख लेती थी कि उसके हाथ में सुई चुभ गयी और उसके हाथ से खून की तीन नन्हीं नन्हीं बूँदें बरफ पर गिर पड़ीं।

लाल रंग का खून बरफ पर पड़ा हुआ था और रानी उसको एकटक देखे जा रही थी। एकाएक उसने अपने मन में ख्याल आया "ओह, अगर मेरे पास बरफ जैसा सफेद, खून जैसा लाल और इस

[32] White Princess and Seven Dwarfs – a foktale from Russia, Asia.
[This story is very popular in European countries in various versions especially in Germany as "Snow White and the Seven Dwarvs" or "Little Snow White and Seven Dwarves". It is given in the beginning of this book. This version is a Russian version.]

खिड़की की काली लकड़ी के रंग जैसे काले बालों वाला एक बच्चा होता तो कितना अच्छा होता।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद ही उसने एक बेटी को जन्म दिया जिसके बाल आबनूस की लकड़ी की तरह काले थे, गाल और होठ खून की तरह लाल थे और उसका रंग इतना सफेद था कि सभी उसे सफेद राजकुमारी कहने लगे। राजकुमारी के पैदा होने के बाद रानी चल बसी।

एक साल बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी रानी बहुत सुन्दर थी पर वह बहुत घमंडी और सबसे जलने वाली थी। दुनियाँ में उसकी केवल एक ही इच्छा थी और वह यह कि धरती पर बस वही एक सबसे सुन्दर स्त्री हो।

उसके पास जादू का एक शीशा था। वह जब भी कभी उसमें अपने आपको देखती तो उससे पूछती — "ओ शीशे, बता सबसे सुन्दर कौन है?"

तो वह शीशा जवाब देता — "ओ रानी, तू ही इस धरती पर सबसे सुन्दर है।" इस जवाब को सुन कर रानी झूम उठती थी क्योंकि वह जानती थी कि उसका यह शीशा उससे हमेशा सच बोलता है।

समय पर समय निकलता चला गया और जैसे जैसे वह सफेद राजकुमारी बड़ी होती गयी वह और भी अधिक सुन्दर होती गयी।

जब वह सात साल की हो गयी तो वह दिन के उजाले की तरह चमकती हुई थी।

और फिर एक समय ऐसा भी आया जब रानी ने अपने शीशे से पूछा — "ओ शीशे, बता सबसे सुन्दर कौन है?"

तो शीशे ने जवाब दिया — "तेरी जैसी सुन्दरता कहीं नहीं है रानी, पर काले बालों वाली सफेद राजकुमारी तुझसे हजार गुना सुन्दर है।"

इस जवाब को सुन कर रानी घबरायी और जलन से लाल पीली हो गयी। अब वह जब भी सफेद राजकुमारी को देखती तो उसका दिल बैठने लगता।

वह उस भोली भाली लड़की से केवल उसकी सुन्दरता की वजह से ही नफरत करने लग गयी थी। उसका दिन का चैन और रात की नींद दोनों हराम हो गयी थीं। आखिरकार उससे रहा नहीं गया।

एक दिन उसने शाही शिकारी को बुलाया और उसे हुकुम दिया कि इस लड़की को जंगल में ले जा कर मार डालो और उसकी कोई निशानी ला कर मुझे दो जिससे मुझे विश्वास हो जाये कि तुमने उसको मार दिया है।

शिकारी रानी के हुकुम से सफेद राजकुमारी को ले कर जंगल चला। पर वहॉ जब वह उसे मारने लगा तो राजकुमारी डर के मारे रो पड़ी और बोली — "ओ शिकारी, तुम मुझे छोड़ दो मुझे मत

मारो। अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं यहॉ से बहुत दूर चली जाऊॅगी और फिर कभी इधर नहीं आऊॅगी।"

उसकी यह प्रार्थना सुन कर शिकारी का दिल पसीज गया। उसने कहा — "ठीक है राजकुमारी, मैं तुमको छोड़ देता हूॅ। पर तुम तुरन्त ही यहॉ से कहीं दूर भाग जाओ और फिर इधर कभी नहीं आना। भगवान जंगली जानवरों से तुम्हारी रक्षा करें।"

राजकुमारी यह सुन कर वहॉ से चली गयी और शिकारी रानी के लिये राजकुमारी के मारने की निशानी के तौर पर एक जंगली सूअर का दिल निकाल कर ले गया।

उस बेरहम रानी ने उस सूअर के दिल को राजकुमारी का दिल समझ लिया और रसोइये से उसे पकवा कर खूब चटखारे ले ले कर खाया।

नन्हीं राजकुमारी जंगल में चलती रही, चलती रही। उसके चारों ओर पत्तियॉ ही पत्तियॉ थीं और थे पेड़ के तने। वह कुछ नहीं जानती थी कि वह क्या कर रही है और कहॉ जा रही है।

रास्ते में कटीली झाड़ियॉ भी थीं और टेढ़े मेढ़े पत्थर भी। चलते चलते उसको बहुत से जंगली जानवर भी मिले। वह उनसे डरी भी पर उन्होंने उसको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया।

अब वह सात ऊॅची ऊॅची पहाड़ियों को पार कर शाम को एक छोटी सी झोंपड़ी के पास पहुॅची। उस झोंपड़ी का दरवाजा खुला था सो वह उसके अन्दर चली गयी।

पर अन्दर तो कोई भी नहीं था। वह बहुत थकी हुई थी सो उसने आराम करने का विचार किया।

अन्दर जा कर उसने चारों तरफ देखा। वहॉ हर चीज़ बहुत छोटी थी मगर थी बहुत साफ और सुन्दर।

कमरे में एक तरफ एक मेज रखी थी जिस पर सफेद मेजपोश बिछा हुआ था। उस मेज पर सात छोटी तश्तरी, सात छोटे कॉटे, सात छोटी चम्मचें और सात छोटे शराब के प्याले रखे थे।

इन सातों तश्तरियों के साथ छोटी छोटी सात कुरसियॉ भी रखी थीं। कमरे के दूसरी ओर सात छोटे छोटे पलंग बिछे थे जिन पर दूध के समान सफेद चादरें बिछी हुई थीं।

सफेद राजकुमारी बहुत भूखी और प्यासी थी सो उसने हर तश्तरी से थोड़ी थोड़ी रोटी और सब्जी खाई और हर प्याले से एक एक घूँट शराब का पिया। अब उसे थकान की वजह से नींद आने लगी मगर वह सोये कहॉ?

पहला पलंग उसके लिये बहुत सख्त था और दूसरा बहुत मुलायम। तीसरा बहुत छोटा था और चौथा बहुत तंग। पॉचवॉ बिल्कुल चौरस था और छठा बहुत गद्देदार। मगर सातवॉ पलंग उसके लिये बिल्कुल ठीक था सो वह उसी पलंग पर जा कर सो गयी।

जब सूरज सातवीं पहाड़ी के पीछे छिप गया और अँधेरा फैलने लगा तो उस छोटी झोंपड़ी के मालिक लोग घर लौटे।

इस झोंपड़ी के मालिक सात छोटे छोटे बौने थे जो सारा दिन सोने और रत्नों की खोज में पहाड़ खोदते थे।

उन्होंने अपनी अपनी छोटी मोमबत्तियॉ जलायीं और देखा कि वहॉ तो कोई था क्योंकि सभी सामान वैसा ही नहीं था जैसा वे छोड़ कर गये थे।

पहला बौना बोला — "मेरी कुरसी पर कौन बैठा?"

दूसरा बौना बोला — "मेरी तश्तरी में से किसने खाया?"

तीसरा बौना बोला — "मेरी रोटी किसने खायी?"

चौथा बौना बोला — "मेरी सब्जी किसने खायी?"

पॉचवॉ बौना बोला — "और मेरा कॉटा किसने इस्तेमाल किया?"

छठा बौना चिल्लाया — "किसने मेरे चाकू से काटा?"

और सातवॉ बौना बोला — "किसने मेरे प्याले में से शराब पी?"

तभी सबकी नजर अपने अपने पलंगों पर पड़ी।

पहले छह बौने एक साथ चिल्लाये — "हमारे पलंगों पर तो कोई सोया था।"

पर सातवॉ बोला — "वह यह है।"

वे लोग अपनी अपनी मोमबत्तियॉ ले आये और उनकी रोशनी में उस सोने वाले को देखते रहे देखते रहे।

वे अपने छोटे मेहमान को देख कर इतने खुश हुए कि उन्होंने उसको जगाया नहीं बल्कि रात भर उसको वहीं आराम से सोने दिया। सातवें बौने ने सभी के पास बारी बारी से एक एक घंटा सो कर अपनी रात गुजारी।

सुबह सवेरे ही सफेद राजकुमारी जाग गयी। उसने कमरे में चारों ओर सात छोटे बौने देखे तो वह घबरा गयी मगर जल्दी ही उसे लगा कि वे उसके दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त हैं।

वह पलंग पर उठ कर बैठ गयी और उनकी तरफ देख कर मुस्कुराने लगी। अपना पूरा आराम करने के बाद वह और भी अधिक सुन्दर लगने लगी थी।

उसको बैठे देख कर सातों बौने उसके चारों तरफ खड़े हो गये और बोले — "बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?"

"सभी मुझे सफेद राजकुमारी कहते हैं।"

"तुमको हमारे घर का रास्ता कैसे मिला?"

इस सवाल के जवाब में उसने उन बौनों को अपनी पूरी कहानी सुना दी।

सातों बौनों ने उसकी कहानी बड़े ध्यान से सुनी और बोले — "क्या तुम्हें घर में काम करना आता है? क्या तुम हमारे लिये खाना बनाना, सिलाई, बुनाई, धुलाई तथा पलंग ठीक करना आदि काम कर सकती हो?

अगर तुम इस घर को ठीक से साफ सुथरा रख सकती हो तो तुम हमारे साथ रह सकती हो और फिर तुम्हें दुनियॉ में किसी चीज़ की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं, बड़ी खुशी से।" सफेद राजकुमारी ने कहा। सो वह वहॉ रह कर उन सातों बौनों का काम करने लगी।

रोज ही सातों बौने सुबह सातों पहाड़ियों में से एक पहाड़ी पर चले जाते और हीरे जवाहरात तथा सोना निकालते और हर शाम को सूरज डूबने के बाद ही लौटते। जब वे घर वापस आते उस समय उनका खाना मेज पर लगा होता था।

लेकिन हर सुबह वे सफेद राजकुमारी को रानी के बारे में चेतावनी देते और कहते — "हमें तुम्हारी मॉ पर विश्वास नहीं है। किसी भी दिन उसको तुम्हारे यहॉ होने का पता चल सकता है इस लिये उससे होशियार रहना और किसी को भी घर के अन्दर नहीं आने देना।"

बौनों का सोचना ठीक था। एक दिन रानी ने खुशी खुशी अपने जादू के शीशे से पूछा — "ओ शीशे, बता दुनियॉ में सबसे सुन्दर कौन है?"

और शीशे ने जवाब दिया — "ओ रानी? तुम बहुत सुन्दर हो पर सबसे सुन्दर वह है जो सात बौनों के साथ उनकी झोंपड़ी में रहती है।"

रानी को बहुत गुस्सा आया क्योंकि उसका खयाल था कि शिकारी ने उसको मार दिया था पर शिकारी ने तो उसको धोखा दिया और सफेद राजकुमारी अभी भी ज़िन्दा थी।

रानी सोच में पड़ गयी कि अब वह क्या करे। रात दिन सोचने के बाद उसके मन में एक विचार उठा।

उसने अपना चेहरा रंग लिया और एक फेरी वाली का वेश बना लिया। उसने यह सब इतनी खूबी से किया कि उसको कोई नहीं पहचान सका। फिर उसने एक टोकरी में झालर, बेलें, डोरियॉ रखीं और उन सातों बौनों के घर की तरफ चल दी।

सात पहाड़ियॉ पार कर वह उन बौनों के घर के सामने पहुँची और दरवाजा खटखटाते हुए बोली — "सुन्दर सुन्दर डोरियॉ झालरें ले लो।"

सफेद राजकुमारी ने अपनी खिड़की से झॉका और बोली — "इधर आओ, दिखाओ तुम्हारी टोकरी में क्या है?"

"झालरें, बेलें, डोरियॉ, सब तरह की और सब रंगों में।" और यह कह कर उसने चटकीले रंगों वाली झालर का एक फन्दा सा बना लिया।

राजकुमारी ने सोचा — "उँह, ये बौने बेकार में ही रानी से डरते हैं। इस ईमानदार औरत को अन्दर आने देने में कोई नुकसान नहीं है।" सो उसने उस औरत के लिये घर का दरवाजा खोल दिया।

वह औरत घर के अन्दर आ गयी और उसने उस औरत से कुछ सुन्दर बेलें ले लीं।

बेलें बेचने के बाद उस औरत ने कहा — "बेटी, तुम इस ढीली ढाली पोशाक में अच्छी नहीं लग रही हो। यहॉ आओ मेरे पास, मैं यह झालर तुम्हारी पोशाक में लगा दूँ ताकि तुम चुस्त हो जाओ।"

राजकुमारी को उस औरत की इस बात पर कोई शक नहीं हुआ सो वह उस तीखी चटकीली झालर को देखती हुई उस औरत के पास जा पहुँची।

उस औरत ने तुरन्त ही वह फन्दा उस लड़की की कमर में डाल कर इतना कस दिया जिससे उसकी सॉस रुक गयी और वह जमीन पर गिर पड़ी।

अब रानी खुशी से बोली — "अहा, अब मैं ही दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री होऊँगी।" और यह कह कर अपने घर वापस चली गयी।

यह अच्छी बात थी कि यह सब तब हो रहा था जब सूरज सातवीं चोटी के पीछे छिप रहा था इसलिये बौने जल्दी ही अपना काम खत्म करके घर आ गये।

जब उन्होंने अपनी प्यारी सी नन्हीं सी राजकुमारी को जमीन पर पड़े देखा तो उन्हें दाल में कुछ काला लगा। राजकुमारी तो न कुछ

बोल रही थी न हिल डुल रही थी। उन्होंने उसे उठाया तो देखा कि एक झालर उसके शरीर पर बहुत कसके बँधी हुई थी।

उन्होंने तुरन्त ही उसके बंधन काट दिये। बंधन कटते ही उसकी साँस वापस आ गयी और उसने आँखें खोल दीं और एक बार फिर सब कुछ ठीक हो गया।

जब बौनों ने सारी कहानी सुनी तो कहा — "वह फेरीवाली नहीं थी राजकुमारी, वह तो दुष्टा रानी थी। इसलिये आगे से होशियार रहना। हम जब घर पर न हों तो दरवाजा किसी के लिये कभी नहीं खोलना।"

जब रानी घर पहुँची तो रानी खुशी खुशी फिर से अपने जादुई शीशे के सामने खड़ी हो कर पूछने लगी — "ओ शीशे, अब बता संसार में सबसे सुन्दर कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया — "ओ रानी, तुम बहुत सुन्दर हो पर सबसे सुन्दर वह है जो सात बौनों के साथ झोंपड़ी में रहती है।"

रानी एक बार फिर चिन्ता में पड़ गयी कि अभी तो वह उस राजकुमारी को मार कर आयी है और वह अभी भी ज़िन्दा है। यह कैसे हुआ। वह फिर गुस्से से लाल पीली हो कर कहने लगी — "अबकी बार मैं ऐसी चाल चलूँगी कि वह बचेगी नहीं।"

यह दुष्टा रानी जादूगरनी भी थी सो अबकी बार उसने एक और चाल खेली।

उसने सोने की एक सुन्दर सी कंघी बनायी जो जहर में बुझी हुई थी। उसने फिर एक बुढ़िया का रूप रखा और सातों पहाड़ियॉ पार कर सातों बौनों के घर पहुँची और आवाज लगायी — "सुन्दर सुन्दर चीज़ें ले लो। सुन्दर सुन्दर चीज़ें ले लो।"

राजकुमारी ने फिर अपनी खिड़की से झॉका और बोली — "आज तुम अपने रास्ते जा सकती हो क्योंकि मुझे दरवाजा खोलने की और किसी को अन्दर घुसाने की इजाज़त बिल्कुल नहीं है।"

बुढ़िया ने कहा — "तुम्हें दरवाजा खोलने की जरूरत नहीं है और मेरा सामान देखने में तुम्हारा कोई नुकसान भी नहीं होगा।" यह कहते हुए उसने अपनी टोकरी से वह जहरीली कंघी निकाल कर उसको दिखायी।

राजकुमारी वह सुन्दर कंघी देख कर उसकी तरफ इतनी आकर्षित हुई कि वह बौनों की दी हुई चेतावनी को भूल गयी और उसने उस बुढ़िया के लिये घर का दरवाजा खोल दिया।

बेचारी राजकुमारी बड़े भोलेपन और विश्वास के साथ ललचाई ऑखों से उस कंघी की तरफ देख रही थी। तभी उस बुढ़िया ने वह कंघी उसके बालों में लगा दी।

पर जैसे ही उस कंघी ने उसके सिर की खाल छुई वैसे ही उसमें लगे जहर ने अपना काम शुरू कर दिया और राजकुमारी बेहोश हो कर गिर गयी।

रानी ने उसकी तरफ नफरत से देखा और मन में सोचा "शायद यह तुम्हारे लिये काफी है।" कह कर वह जल्दी जल्दी वहॉ से चली क्योंकि सूरज अब सातवीं चोटी के पीछे छिपने ही वाला था।

कुछ मिनटों बाद ही बौने आये तो उन्होंने सफेद राजकुमारी को फिर से फर्श पर पड़े देखा तो समझ गये कि आज रानी फिर आयी थी और राजकुमारी ने आज फिर उसके लिये घर का दरवाजा खोला था।

जल्दी ही उन्होंने बच्ची के बालों में लगी कंघी ढूँढ ली और उसे निकाल लिया। कंघी के निकलते ही उसने ऑखें खोल दीं और वह उठ कर बैठी हो गयी।

राजकुमारी की कहानी सुन कर बौने गम्भीर हो गये और बोले — "देखा राजकुमारी, वह कोई बुढ़िया नहीं थी वह तो रानी ही थी जो रूप बदल कर यहॉ आयी थी इसलिये अब की बार तुम होशियार रहना। किसी से कोई चीज़ खरीदना नहीं और किसी भी कीमत पर किसी को अन्दर नहीं आने देना।"

राजकुमारी ने फिर पक्का वायदा किया कि वह बौनों का कहा मानेगी और किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलेगी।

इसी समय रानी अपने घर पहुॅची तो एक बार फिर खुशी खुशी अपने जादुई शीशे के सामने खड़ी हो कर पूछने लगी — "ओ शीशे, बता संसार में सबसे सुन्दर कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया — "ओ रानी, तुम बहुत सुन्दर हो पर सबसे सुन्दर वह है जो सात बौनों के साथ उनकी झोंपड़ी में रहती है।"

यह सुन कर रानी की हॅसी फिर उड़ गयी और वह गुस्से से दॉत किटकिटाने लगी और बोली — "इस दुनियॉ में मैं ही सबसे सुन्दर हूॅ और मैं ही सबसे सुन्दर रहूॅगी।"

ऐसा कह कर वह पैर पटकती हुई अपने प्राइवेट कमरे में पहुॅची जहॉ कभी कोई दूसरा आता जाता नहीं था।

वहॉ उसने अपने जादू के असर से एक सेब बनाया जो सफेद और लाल रंग का था। वह देखने में ऐसा था कि उसको देख कर किसी के भी मुॅह में पानी आ जाये।

लेकिन अच्छाइयों से वह सेब कोसों दूर था क्योंकि उस सेब की खासियत यह थी कि उसका लाल हिस्सा जहरीला था।

फिर उसने एक किसान की पत्नी का वेश बनाया, उस जहरीले सेब को साधारण सेबों के साथ अपनी टोकरी में रखा और एक बार फिर वह सातों पहाड़ियों को पार कर वह उन सातों बौनों के घर जा

पहुँची जहाँ राजकुमारी रहती थी और जा कर पहले की तरह उनकी झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया।

राजकुमारी ने खिड़की से झाँका और बोली — "मुझे न तो किसी को अन्दर बुलाने की इजाज़त है और न ही कोई चीज़ खरीदने की। सातों बौनों ने मुझे मना किया है।"

किसान की पत्नी ने कहा — "कोई बात नहीं बेटी। मुझे अपने सेब बेचने में कोई परेशानी नहीं है वह तो मैं कहीं और भी बेच लूँगी पर यह देखो, यह सुन्दर सेब मैं खास तुम्हारे लिये लायी हूँ और तुम्हें मुफ्त में देने को तैयार हूँ।"

"नही नहीं, मुझे अजनबियों से भी कोई चीज़ लेने की इजाज़त नहीं है।"

"ऐसा लगता है कि तुम डर रही हो। क्या जहर से? देखो यह मैंने इस सेब को काट दिया और यह कोई नुकसान भी नहीं करेगा। इसका यह सफेद आधा हिस्सा मैं खाती हूँ और यह लाल मीठा हिस्सा तुम खा लो।"

यह सब देख कर राजकुमारी के मुँह में पानी भर आया और वह देर तक इन्तजार न कर सकी। उसने अपना नन्हा हाथ खिड़की से बाहर निकाला और उस सेब का वह लाल हिस्सा उस किसान की पत्नी से ले कर जैसे ही खाया वैसे ही वह फर्श पर गिर पड़ी।

नफरत भरी एक नजर राजकुमारी पर डाल कर रानी ज़ोर से बोली — "बरफ के समान सफेद, खून के समान लाल और आबनूस

की लकड़ी के समान काले बालों वाली लड़की, अब देखती हूँ कि बौने तुझे कैसे बचाते हैं।"

रानी को अब खुशी के मारे घर पहुँचना मुश्किल हो गया। घर पहुँचते ही उसने शीशे से फिर पूछा — "क्यों शीशे, अब बता दुनियॉ में सबसे सुन्दर कौन है?"

और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने सुना — "ओ रानी, दुनियॉ में तू ही सबसे सुन्दर है।" अब रानी के दिल दिमाग में शान्ति थी।

रानी के जाने के बाद जब वे सातों बौने घर लौटे तो उन्होंने देखा कि घर में कहीं रोशनी नहीं थी। न चिमनी से धुँआ उठ रहा था, न लैम्प जलाये गये थे और न मेज पर खाना था। सफेद राजकुमारी फिर फर्श पर गिरी पड़ी थी और उसकी सॉस भी नहीं चल रही थी।

उन्होंने सोचा कि हमें इसे जरूर बचाना चाहिये। उन्होंने अपनी अपनी मोमबत्तियॉ जलायीं और कोई भी जहरीली चीज़ ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उनको कहीं भी कुछ भी नहीं मिला।

उन्होंने उसकी पोशाक ढीली की, बालों में हाथ फेरा, चेहरा धोया, पर कुछ नहीं हुआ। वह बेचारी बच्ची न हिली, न बोली और ना ही उसने अपनी ऑखें खोलीं।

सब बौने दुखी थे। "क्या करें? हम जो कुछ कर सकते थे वह हमने सभी कुछ करके देख लिया। लगता है राजकुमारी तो अब हमेशा के लिये हमारे हाथ से गयी।"

और फिर सब बौनों ने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। वे लोग पूरे तीन दिन तक रोते रहे और जब वे चुप हुए तब भी राजकुमारी बिना हिले डुले पड़ी हुई थी। लेकिन वह अभी भी ऐसी दिखायी दे रही थी जैसे कि अभी अभी सोयी हो।

बौनों ने आपस में कहा — "यह तो अभी भी उतनी ही सुन्दर दिखायी दे रही है जितनी पहले दिखायी देती थी। पर क्योंकि हम उसे जगा नहीं सके इसलिये हमें इसकी देखभाल ठीक से करनी चाहिये।"

सो उन्होंने उसका शरीर रखने के लिये शीशे का एक बक्सा बनवाया जिस पर लिखा था "सफेद राजकुमारी"।

उस बक्से में उन्होंने राजकुमारी को रखा और उस बक्से को पहाड़ों की उन सातों चोटियों में से एक चोटी पर ले गये जहॉ वे खुदायी करते थे। वहॉ उन्होंने वह बक्सा पेड़ों और फूलों के पास रख दिया।

वहॉ तीन पक्षी भी उसके मरने पर शोक प्रगट करने पर आये — पहले एक उल्लू आया, फिर एक कौआ आया और फिर एक छोटी फाख्ता आयी।

अब रोज छह बौने ही खुदायी के लिये जाते थे क्योंकि एक बौना बारी बारी से राजकुमारी की देखभाल के लिये वहॉ रहता था। हफ्ते, महीने, साल बीत गये पर राजकुमारी उसी बक्से में लेटी रही। न हिली न डुली और न उसने अपनी ऑखें ही खोलीं।

उसका चेहरा पहले की तरह सफेद था। उसके गाल अभी भी लाल थे। जहॉ उसका ताबूत रखा था फूल वहॉ खूब तेज़ी से उग रहे थे, बादल भी खूब उड़ रहे थे, चिड़ियॉ भी वहॉ आ कर खूब गातीं थीं। जंगली जानवर पालतू हो गये थे और वहॉ आश्चर्य से खड़े रह कर उसको घंटों देखते रहते थे।

इन सबके साथ साथ वहॉ एक और जीव भी आया। वह भी उसको आश्चर्य से खड़ा देखता रह गया। पर वह न तो चिड़िया थी, न खरगोश, और न हिरन, बल्कि वह तो एक छोटा राजकुमार था जो उन सात पहाड़ियों पर रास्ता भूल गया था।

उसने जब इस राजकुमारी को देखा तो बस देखता ही रह गया। उसने बौनों से कहा — "आप मुझे यह शीशे का बक्सा घर ले जाने दें और इसके बदले में आप मुझसे जितना सोना चाहें ले लें।"

लेकिन बौनों ने कहा — "हम संसार की दौलत ले कर भी इसे किसी को नहीं दे सकते।"

राजकुमार ऑखों में ऑसू भर कर बोला — "अगर आप दौलत नहीं लेना चाहते तो न लें पर आप दयावान हैं कम से कम इसी लिये आप इसे मुझे दे दें।

जाने क्यों मेरा मन इसी की तरफ खिंचा जा रहा है। अगर आप मुझे इसे घर ले जाने देंगे तो मैं इसकी अपने खजाने की तरह देखभाल करूॅगा।"

यह सुन कर बौनों ने वह बक्सा उसे दे दिया। राजकुमार ने उनको धन्यवाद दिया और अपने नौकरों को बुलाया और उनको उस बक्से को कन्धे पर उठा कर ले जाने के लिये कहा। सो वे उस बक्से को अपने कन्धों पर उठा कर ले चले।

बहुत सावधानी बरतने के बावजूद एक पहाड़ी पर एक आदमी का पैर फिसल गया। इससे वह बक्सा पूरी तरह हिल गया और राजकुमारी के गले में से उस जहरीले सेब का टुकड़ा बाहर आ गया। और यह लो वह राजकुमारी तो जाग गयी।

सबने मिल कर वह बक्सा खोला। राजकुमारी को अपने आपको वहॉ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

राजकुमार दौड़ा आया और बक्से में से उसे निकाला। राजकुमार ने फिर उसे सारा हाल बताया कि कैसे वह उसको वहॉ से

अपने घर ले कर जा रहा था और उससे प्रार्थना की कि वह उससे शादी कर ले। राजकुमारी ने हॉ कर दी।

उधर रानी को एक शादी में आने का बुलावा मिला। वह अपने सबसे अच्छे कपड़ों में तैयार हुई और जाने से पहले अपने उसी जादुई शीशे के पास अचानक जा कर खड़ी हो गयी और बोली — "ओ शीशे, बता दुनियॉ में सबसे सुन्दर कौन है?"

शीशे ने कहा — "ओ रानी, तुम सबसे सुन्दर हो पर सफेद राजकुमारी अभी भी ज़िन्दा है और शादी के लिये तैयार है। वही सबसे सुन्दर है।"

रानी ने सुना तो ताड़ गयी कि वह बुलावा राजकुमारी की शादी का ही था। वह फिर गुस्से से लाल पीली हो गयी पर अब वह कुछ नहीं कर सकती थी।

राजकुमार और राजकुमारी की शादी हो गयी और वे दोनों और सातों बौने बहुत समय तक आनन्द से रहे।

7 सफेद फूल[33]

स्नो व्हाइट जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के मैक्सिको देश में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक रानी थी जो जितनी सुन्दर थी उतनी ही घमंडी थी। इस रानी के एक बेटी थी जिसका नाम था सफेद फूल जो बहुत सुन्दर थी और दिनों दिन और ज़्यादा सुन्दर होती जा रही थी।

अपनी सुन्दरता के घमंड को शान्त करने के लिये रानी के पास एक जादुई शीशा था जिससे वह रोज पूछती थी — "बता ओ शीशे बता, दुनियॉ में सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

और वह शीशा जवाब देता — "तुम हो रानी केवल तुम, रानी केवल तुम।"

जैसे जैसे साल बीतते गये सफेद फूल की सुन्दरता बढ़ती ही गयी। सो एक दिन जब रानी ने पूछा — "शीशे ओ शीशे बता सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

---

[33] White Flower (Blanca Flor) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold and written by Sra Eva Rueda Fraire
[Author's Note : With but a few variations "Blanca Flor" is the story of Snow White. Its 38 versions have been reported in Spain only. Stith Thompson reports that the story of Snow White has not been found in the Americas except for one Portuguese version (*The Folktale,* pp. 124-125).
Three versions are found on the Mexican Border: one, "Blanca Flor"; two, a garbled story resembling the type of tale presented in "A Maiden Without Arms" more than Snow White; and three, a version of Grimm's tale.]

तो शीशा बोला — "सफेद फूल।"

रानी यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गयी। उसको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ तो उसने शीशे से दोबारा पूछा — "शीशे ओ शीशे बता सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

शीशा फिर बोला — "तुम्हारी बेटी सफेद फूल।"

रानी बहुत ही बेरहम थी सो यह सुनते ही वह नाराज हो गयी। उसने निश्चय किया कि वह सफेद फूल को मरवा डालेगी। उसने अपने एक भरोसे के नौकर को बुलवाया जो अक्सर उसके ऐसे ही बुरे काम किया करता था।

उसने उस नौकर से कहा — "जुआन[34], सफेद फूल को मार डालो।"

नौकर आश्चर्य से बोला — "लेकिन महारानी....।"

रानी बोली — "बस एक शब्द भी नहीं। मैं चाहती हूॅ कि कल सुबह ही तुम सफेद फूल को जंगल में ले जाओ और वहॉ ले जा कर उसे मार डालो। मुझे तुम्हारे काम का सबूत भी चाहिये।"

अगले दिन जुआन ने सफेद फूल से कहा कि वे लोग जंगल में फूल तोड़ने जायेंगे। सो दोनों जंगल की तरफ चल दिये।

जब वे जा रहे थे ता जुआन को राजकुमारी पर बहुत तरस आ रहा था। वह यह सोच ही नहीं सका कि वह उसको मार सकता था सो उसने सफेद फूल को सब कुछ बता दिया।

[34] Juan – name of the servant of the Queen

वह बोला — "मेरी राजकुमारी, तुम्हारी माँ ने मुझे तुमको मारने का हुकुम दिया है। क्योंकि तुम हमेशा से ही मेरे साथ बहुत अच्छी रही हो इसलिये मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता फिर भी अगर मैं तुम्हारी कोई निशानी लिये बिना घर लौटा तो रानी मुझे मरवा देगी।

इसके लिये मैंने एक तरकीब सोची है जिससे हम रानी को धोखा दे सकते हैं। तुम मुझको अपना एक कपड़ा दे दो। मैं एक खरगोश मारूँगा और उसके खून को तुम्हारे उस कपड़े पर लगा दूँगा और वह कपड़ा ले जा कर रानी को दे दूँगा।"

राजकुमारी यह सुन कर रो पड़ी और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जब जुआन ने यह सब कर लिया तो उसने राजकुमारी से कहा — "जाओ बेटी, अब तुम भगवान के सहारे हो।"

सफेद फूल ने जुआन को एक बार फिर धन्यवाद दिया और वह जंगल में और आगे की तरफ चली गयी।

जब शाम हो गयी तो उसको रात में घूमने वाले जानवरों की आवाजें सुनायी देना शुरू हो गयीं। हर कदम पर उसका जंगली जानवरों का डर बढ़ता ही जाता था।

अचानक उसको दूर रोशनी दिखायी दी तो वह उस रोशनी की तरफ दौड़ी। जल्दी ही वह एक फूस की छत वाली झोंपड़ी के पास आ पहुँची।

राजकुमारी ने उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया पर अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। उसने दरवाजा दोबारा खटखटाया पर फिर भी उसको उसका कोई जवाब नहीं मिला।

क्योंकि वह बहुत डरी हुई थी सो वह दरवाजा खोल कर अन्दर चली गयी। कमरे के बीच में एक मेज पर खाने पीने की चीज़ें लगी रखी थीं।

सफेद फूल बहुत भूखी थी सो वह मेज पर बैठ गयी। पहले उसने खाना खाया और फिर भगवान को धन्यवाद दिया। खाना खा कर उसको नींद आने लगी सो वह वहीं चूल्हे के पास लेट गयी और सो गयी।

यह झोंपड़ी डाकुओं के एक झुंड की थी। सुबह को जब वे घर लौटे तो यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि उनके घर में एक सुन्दर सी लड़की चूल्हे के पास पड़ी सो रही थी।

उनके आने से जो शोर हुआ तो सफेद फूल की ऑख खुल गयी। डाकुओं का सरदार बोला — "डरो नहीं ओ लड़की। हम तुमको कोई तकलीफ नहीं देंगे।"

और जो कुछ उसने कहा वही उसका मतलब भी था। उनका उसको किसी भी तरह की कोई तकलीफ देने का कोई इरादा नहीं था।

ये डाकू लोग दयालु थे। ये लोग केवल अमीरों को लूटते थे और वह लूटा हुआ पैसा गरीबों में बॉट देते थे।

जब सफेद फूल ने देखा कि वे डाकू दयालु हैं तो उसने अपनी मॉ की बेरहमी की कहानी उनको बता दी।

डाकुओं ने कहा — "तुम यहॉ हमारे पास आराम से रह सकती हो। हमको तो यह पहले से ही पता है कि रानी कितनी बेरहम है।

पर तुम उससे सावधान रहना। क्योंकि अगर उसको यह पता चल गया कि तुम यहॉ हमारे पास हो तो वह तुमको यहॉ भी मारने की कोशिश करेगी।"

इस बीच जुआन महल वापस पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने खून का धब्बा लगा राजकुमारी का कपड़ा रानी को दिखाया तो रानी को विश्वास हो गया कि जुआन ने राजकुमारी को मार दिया है।

वह इस सबूत को देख कर इतनी खुश हुई कि उसने जुआन को बहुत सारा इनाम दिया।

उस रात रानी फिर अपने जादुई शीशे से पूछा — "शीशे ओ शीशे बता सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

शीशा फिर बोला — "तुम्हारी बेटी सफेद फूल।"

यह सुन कर तो फिर वह गुस्से से लाल पीली हो गयी। उसने तुरन्त ही अपने चौकीदारों को बुला कर उनसे जुआन को बुलाने के लिये कहा।

जुआन आया और बोला — "मगर महारानी जी....।"

पर इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी करता रानी ने खुद ने उसको चाकू मार कर मार दिया। उस रात रानी सारी रात नहीं सो

सकी। वह यही सोचती रही कि वह कैसे सफेद फूल को ढूँढ कर उसे मार सकती थी।

रानी के पास एक जादुई क्रीम थी सो अगले दिन रानी ने उस जादुई क्रीम की सहायता से एक किसान स्त्री का वेश बनाया। इस वेश में अब उसको कोई पहचान नहीं सकता था।

फिर उसने चालाकी से बनाये गये एक चॉदी के डिब्बे में गले का एक जादुई सोने का हार रखा। जो कोई उस हार को पहनता तो वह तुरन्त ही गहरी नींद में सो जाता।

हार का वह डिब्बा ले कर वह महल से निकल पड़ी और जल्दी ही जंगल में आ गयी। जंगल में चलते चलते वह उस झोंपड़ी के पास भी आ गयी जिसमें सफेद फूल रहती थी।

वहॉ पहुँच कर रानी ने दरवाजा खटखटाया। जब उसने दरवाजा खटखटाया तो सफेद फूल उस समय बिल्कुल अकेली थी। सफेद फूल ने खिड़की से झॉक कर देखा तो उसको एक भली सी बुढ़िया नजर आयी।

यह सोचते हुए कि यह भली सी बुढ़िया उसका क्या बिगाड़ सकती है उसने दरवाजा खोल दिया। रानी बोली — "बच्चे, क्या तुम मुझको एक गिलास ठंडा पानी पिला सकती हो? मैं बहुत थक गयी हूँ और मुझे प्यास भी बहुत लगी है।"

सफेद फूल बोली — "हॉ हॉ, आओ अन्दर आओ।"

और भाग कर वह रसोई से पानी ले आयी। रानी ने पानी पिया और उसको धन्यवाद दिया।

फिर वह बोली — "बेटी, मैं अब चलूँगी पर क्योंकि तुमने मेरे साथ इतना अच्छा बरताव किया है इसके बदले में मैं तुमको यह सोने का गले का हार देना चाहती हूँ।"

राजकुमारी गले का हार लेते हुए और उसको अपने गले में पहनते हुए बोली — "धन्यवाद दादी मॉ।"

जैसे ही उसने उस हार का कुंडा लगाया वह फर्श पर गिर पड़ी जैसे मर गयी हो। लड़की को वहीं छोड़ कर जहॉ वह गिर गयी थी रानी अपने घर वापस चली आयी।

शाम को जब वे डाकू घर लौटे तो उन्होंने देखा कि सफेद फूल तो मरी पड़ी है। उसको ज़िन्दा करने के लिये वे जो कुछ भी कर सकते थे उन्होंने किया पर उनकी सारी कोशिशें बेकार गयीं। वह ज़िन्दा नहीं हो पायी।

वे डाकू सफेद फूल को बहुत प्यार करते थे सो उन्होंने उसके लिये एक क्रिस्टल का ताबूत[35] बनाने का निश्चय किया ताकि वे उसे जब चाहें देख सकें।

[35] Crystal coffin

उन्होंने वैसा ताबूत बना कर सफेद राजकुमारी को उसमें लिटा दिया और उस ताबूत को एक गुफा में रख दिया। उन्होंने उस ताबूत को उस गुफा में इसलिये रखा था क्योंकि वह गुफा उनके घर के पास ही थी। अब वे रोज जा कर उसको देख सकते थे।

धीरे धीरे समय बीतता गया कि बारिश के एक दिन एक राजकुमार उसी गुफा में बारिश से बचने के लिये रुक गया जिसमें सफेद फूल का क्रिस्टल का ताबूत रखा हुआ था।

जब उसके नौकरों ने रोशनी के लिये मशालें जलायीं तो उन्होंने तो वहॉ एक ताबूत देखा। और उसमें देखी एक सुन्दर सी लड़की – सफेद फूल।

उसको देखते ही राजकुमार को उससे प्यार हो गया। उसने सोचा कि वह लड़की मर चुकी थी पर फिर भी उसने अपने नौकरों को उस ताबूत को अपने राज्य ले जाने का हुकुम दिया।

वहॉ पहुँच कर उसने एक बहुत ही सुन्दर चर्च बनवाया और सफेद फूल का वह ताबूत वहॉ रखवा दिया।

एक दिन उस चर्च का देखभाल[36] करने वाला बीमार पड़ गया तो चर्च की देखभाल करने के लिये उसकी मॉ वहॉ आयी। वह चोर थी सो जब उसने सफेद फूल के गले में वह सोने का हार देखा तो उसने उसको उसी समय चुराने का फैसला कर लिया।

[36] Translated for the word “Sexton”

बड़ी सावधानी से उसने सफेद फूल का वह गले का हार उसके गले से निकाल लिया। पर यह क्या? जैसे ही उसने उसके गले से वह हार निकाला बहुत ज़ोर से बिजली कड़कने की आवाज हुई और वह सफेद फूल जाग गयी।

मॉ यह देख कर बहुत डर गयी और वहॉ से भाग गयी। यह सब शोर सुन कर राजकुमार भी चर्च की तरफ भागा। वहॉ जा कर उसने देखा कि सफेद फूल तो अपने ताबूत में बैठी हुई है।

सफेद फूल ने भी जब राजकुमार को देखा तो उसको भी उस राजकुमार से प्यार हो गया। उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी बतायी तो राजकुमार अपनी सेना ले कर सफेद फूल की मॉ को सजा देने गया।

उसके बाद सफेद फूल और राजकुमार की शादी हो गयी और वे खुशी खुशी रहने लगे।

Snow White Like Stories

1. The Little Snow White
2. The Young Slave
3. Maria, The Wicked Stepmother and the Seven Robbers
4. The Crystal Casket
5. Gold Tree and Silver Tree
6. White Princess and Seven Dwarfs
7. White Flower

Books in “One Story Many Colors” Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumplestiltuskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**